मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

बुद्धिजीवी वर्ग की ज़िम्मेदारी

''शिक्षा व प्रशिक्षण के ज़िम्मेदारों का यह भी कर्तव्य है कि वे हर ऐसी चीज़ का मुक़ाबला करें जो साहस व पुरूषार्थ की आत्मा को कमज़ोर कर रहा हो तथा हीन भावना उत्पन्न करती हो। अश्लील पत्रकारित्रा, अश्लील तथा नास्तिक साहित्य की रोकथाम करें जो नवयुवकों में कपट, बेहयाई तथा अश्लीलता को बढ़ावा दे रहा हो। उन पेशावरों को रसूलुल्लाह (स०अ०) के फौजी कैम्प में न दाख़िल होने दें जो इस्लामी नस्ल की आत्मा तथा व्यवहारिक जीवन में फ़साद उत्पन्न करना चाहते हों तथा गुनाहों तथा अश्लीलता को कुछ पैसों की ख़ातिर सुन्दर व सुसज्जित बनाकर प्रस्तुत करतें हों।''

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

JULY 18

₹10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

शौक़-ए-आख़िरत

मौत के बाद रूहों की आपसी मुलाक़ात और बातचीत

''अन्सारी सहाबी अबू अय्यूब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया कि जब मोमिन की जान क़ब्ज़ की जाती है तो अल्लाह तआला के मरहूम बन्दे बढ़ कर इस तरह (और इस इश्तियाक़) से मिलते हैं जिस तरह दुनिया में किसी ख़ुशख़बरी लाने वाले से मिलते हों। फिर कहते हैं कि अच्छा उसे ज़रा दम तो लेने दो कि दुनिया में यह सख़्त परेशानी में था और उसके बाद उससे पूछना शुरू कर देते हैं कि फ़लां मर्द का क्या हाल है और फ़लां औरत का क्या?क्या उस औरत ने दूसरा निकाह कर लिया?फिर अगर वह ऐसे शख़्स का हाल पूछते हैं तो जो उससे पहले मर चुका है तो वह जवाब में कह देता है कि वह तो मुझसे पहले ही मर चुका है, तो ''इन्नल्लाह'' पढ़कर कहते हैं कि बस तो उसे बुरे ठिकाने ले जाया गया है। (यानि दोज़ख़ को)

रूदाद आपने सुन ली! जब रूह बरज़ख़ में दाख़िल होगी तो इंशाअल्लाह अज़ीज़ों, दोस्तों, रफ़ीक़ों का एक गिरोह इस्तेक़बाल व ख़ुशआमदीद कहने को मिलेगा और दुनिया वालों का हाल लपक–लपक कर पूछेंगे कि फ़लां पर क्या गुज़री और फ़लां का क्या हाल है? और अगर किसी ने ऐसे का नाम ले दिया जो आपसे पहले गुज़र चुका तो आपको यही कहना पड़ेगा कि भई! वह तो मुझसे पहले ही यहां आ गया है।

''अरे'' और ''हाय'' कहकर वह ताज्जुब से इन्नल्लाह पढ़ेंगे और मायूस होकर यक़ीन कर लेंगे कि मालूम होता है कि वह हमसे छटकर कहीं दूसरे उस मरकज़ के हवाले हो गया जो ठिकाना ख़ुशनसीबों और ईमान वालों का नहीं, बल्कि बदनसीब मुनकिरों और काफ़िरों का है। आह! उस वक़्त के ख़ुश नसीब नजातयाब को मसर्रत का अंदाज़ा कोई बशरी दिमाग़ आज कर सकता है?

''और आप स०अ० ने यह भी फ़रमाया कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे अज़ीज़ों और अहले ख़ानदान के सामने पेश किये जाते हैं जो आख़िरत में हैं। अगर यह अमल नेक हैं तो वह ख़ुश व बशशाश होते हैं और कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरा फ़ज़्ल व रहमत है उस पर, सो अपनी हर नेमत उस पर पूरी कीजिए और उस पर उसको मौत दीजिए और उन पर जब गुनाहगार अमल पेश होता है तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह! उसके दिल में नेक अमल डालियो जो सबब बन जाए तेरी रज़ा और तक़र्रुब का।

आज आपका लड़का या कोई और अज़ीज़ आपसे दूरे अलीगढ़ में, दिल्ली में, लखनऊ में, सहारनपूर में पढ़ता होता है और आपके पास इत्तेला आती है कि वह ख़ूब पढ़–लिख रहा है और अच्छी सोहबत में उठता बैठता है। बड़े शौक़ से अपने कामों में दिल लगाए हुए है तो आप क्या ख़ुश होते हैं और आपका दिल कैसा बढ़ जाता है। और इसके बरअक्स कहीं यह ख़बर आ गयी कि आपका लड़का या अज़ीज़ परदेस में आवारगी में पड़ गया है, वक़्त ज़ाया कर रहा है, पढ़ने–लिखने में बिल्कुल पीछे रह जाता है तो आपको कितनी तकलीफ़ होती है?कैसा ग़ुस्सा आता है और दिल फट कर रह जाता है।

यह कैफ़ियत जब इस दुनिया की मामूली दूरी और मुसाफ़त में महसूस होती है तो इस आलम से उस आलम के फ़ासले के दरमियान इसका असर कई गुना बढ़ जाता है। आप यह कभी भी गवारा करेंगे कि आपके मां–बाप तक, आपके भाइयों तक, आपके कुल अज़ीज़ों, रफ़ीक़ों, बुज़ुर्गों तक आपके बारे में रिपोर्टें कुछ भी नाख़ुशगवार क़िस्म की पहुंची?

''सईद बिन जबीर ताबई कहते हैं कि जब कोई मरता है तो उसकी औलाद आलमे अरवाह में उसका इस तरह इस्तक़बाल करती है कि जैसे किसी बाहर गये हुए का इस्तेक़बाल उसकी वापसी के वक़्त किया जाता है।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक : ७ — जुलाई २०१८ ई० — वर्ष : १०

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

देश के लिये एक बड़ा ख़तरा..२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अल्लाह की मर्ज़ी..३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

दीनी मदरसे और उनकी ज़िम्मेदारियाँ..५
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

एकेश्वरवाद क्या है?..६
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आदमियत का एहतराम..९
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

नमाज़—ए—जनाज़ा के एहकाम..११
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

क्या मुसलमान सियासी अछूत बना दिये गये हैं.............१३
जनाब सुहैल अंजुम साहब

वचन निभाना..१८
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

तुर्की चुनाव — एक विश्लेषण..१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com — www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल—नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी० 229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल—नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

देश के लिये एक बड़ा ख़तरा

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इधर कुछ सालों में देश की अर्थव्यवस्था जिस तरह प्रभावित हुई है वह पूरे देश के लिये अत्यन्त चिन्ताजनक है। अर्थव्यवस्था की हैसियत किसी भी देश के लिये रीढ़ की हड्डी की है। जब यह व्यवस्था बिगड़ती है तो देश का संभालना मुश्किल हो जाता है। संयुक्त सोवियत यूनियन की मिसाल सबके सामने है। इसकी अर्थव्यवस्था बिगड़ी तो सुपर पॉवर होने के बावजूद पूरा देश बिखर कर रह गया। ख़्वाबों की जन्नत में रहने वालों का शीशमहल ऐसा चूर–चूर होता है कि फिर कोई तदबीर काम नहीं आती।

हमारे देश के शीर्ष नेतृत्व ने भी जिस तरह सब्ज़ बाग़ दिखाए इस पर देश का बड़ा वर्ग प्रभावित हुए बिना न रह सका। लेकिन मौजूदा हालात ने देश को जिस रुख़ पर डाल दिया है रिसर्च करने वाले अब लगातार आगाह कर रहे है कि अब भी अगर संभाला न गया तो इस देश की डूबती हुई कश्ती को संभालना बहुत मुश्किल हो जायेगा।

धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देकर आंखों में धूल झोंकी जा रही है तथा देश की गिरती हुई साख पर पर्दा डालने के लिये नये–नये नारे दिये जाते हैं। यहां के लोग इसी में उलझ कर रह गये हैं ताकि किसी को देश की फ़िक्र न रहे। यह देश तो विभिन्न धर्मों तथा जातियों का एक गुलदस्ता रहा है। इसके फूल मसल दिये जाएं। अपने वक़्त के प्रधानमंत्री मिस्टर अटल बिहारी वाजपेयी जब हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी की अयादत के लिये हाज़िर हुए तो उस वक़्त भी हज़रत मौलाना ने अपनी धीमी लेकिन दृढ़ आवाज़ में कहा था:

"बाजपेयी जी, देश की चिन्ता कीजिए, देश ख़तरे में है।" फिर हज़रत मौलाना ने फ़रमाया कि यह देश एक बड़ी कश्ती या शिप की तरह है और सब इसके सवार हैं। अगर कोई इस कश्ती में सुराख़ करे तो उसको रोकना होगा वरना अगर यह कश्ती डूबी तो न हम बचेंगे न आप।

इस वक़्त देश के हालात बेहद चिंतनीय हैं। भ्रष्टाचार चरम पर है। अर्थव्यवस्था फ़ेल हो चुकी है। बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है। ज़ुल्म व अत्याचार का स्वभाव बनता जा रहा है। यह सब चीज़ें घुन की तरह देश को चाटती चली जा रही हैं। अगर इनका इलाज न किया गया तो आने वाला कल न जाने क्या लाने वाला है। ऐसा करने वालों के उद्देश्य जो भी हों लेकिन देश के शुभचिन्तकों की ज़िम्मेदारी क्या है?कोई कश्ती में सुराख़ करे और सब कश्ती के सवार आराम से सोते रहें इसका नतीजा क्या निकलेगा?कश्ती डूबेगी तो सब डूबेंगे।

मसला न किसी मज़हब का न ज़ात का। मसला पूरे देश का है। इसकी एकता व अखंडता का है। इसकी तरक़्क़ी का है। इस इशू पर यहां सब रहने वालों को ग़ौर करने की ज़रूरत है। बल्कि मैदान में आने की ज़रूरत है। कोई किसी भी जीवन के हिस्सो से संबंध रखता हो। उसकी अपनी कैसी ही व्यस्तताएं हों, लेकिन जब बेस ही न रहेगा तो कहां की व्यस्तताएं और कैसे काम। इस वक़्त ज़रूरत इस बात की है कि सब सर जोड़ कर बैठें और देश के लिये जो बुनियादें तय की गयीं थी उन बुनियादों पर दोबारा इस देश को प्रदर्शित करें ताकि इसकी अर्थव्यवस्था मज़बूत हो और ख़तरों के जो बादल पूरे देश पर मंडला रहे हैं। आसमान इनसे साफ़ हो सके।

अल्लाह की मर्ज़ी

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

सूरह कहफ़ में ऐसे कई वाक़्यात हैं जिनमें यह बता दिया गया है कि तुम ज़ाहिर में यह देख रहे हो कि सब चीज़ें ख़ुद ब ख़ुद हो रही है और जैसे ढाल पर पानी बह रहा है इस तरह चली जा रही हैं। लेकिन तुम इस बात को मानो कि इसमें हर चीज़ अल्लाह के हुक्म से होती है। बीमारी अल्लाह के हुक्म से होती है। सेहत अल्लाह के हुक्म से होती है। लोगों की उमरें अल्लाह की मुकर्रर की हुई होती हैं और जहां इन्सान पैदा हुआ है, जिस ख़ानदान और जिस हालात में पैदा हुआ है, यह सब अल्लाह की तरफ़ से पहले से तय है। इस कायनात को पैदा करने से पहले अल्लाह तआला ने पूरा निज़ाम बना दिया है और उसी निज़ाम के मुताबिक़ हर चीज़ चल रही है। और अल्लाह ने वह निज़ाम सिर्फ़ बनाकर नहीं छोड़ दिया है बल्कि हर चीज़ उसकी इजाज़त से चल रही है। जो दवाएं हैं वह अल्लाह की इजाज़त से फ़ायदा करती हैं और अल्लाह तआला जिस दवा का फ़ायदा चाहता है रोक लेता है। यहां तक कि इस कायनात की बारीक से बारीक चीज़ भी अल्लाह के इल्म में है और वह उसकी इजाज़त से हो रही है। सूरह कहफ़ में ईमान वालों को इसी अक़ीदे की तालीम दी गयी है।

लेकिन मादि्दयत का फ़लसफ़ा मज़कूरा नज़रिये के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। मादि्दयत परस्त कहते हैं कि सबकुछ हम ही ने बनाया है, जबकि असलन उन्होंने महज़ इन्किशाफ़ किया है। मगर वह इन्किशाफ़ से ईजाद समझ बैठे हैं, जबकि वाक़्या यह है कि लफ़्ज़ी तौर पर ईजाद का लफ़्ज़ इस्तेमाल कर लिया जाता है, लेकिन हक़ीक़त में हमने कोई चीज़ ईजाद नहीं की है। सब चीज़ें हमको अल्लाह से मिली हैं। अलबत्ता हमको उनमें अल्लाह तआला ने तसर्रुफ़ का हक़ दिया है कि हम उसमें उलटफेर कर सकते हैं। लेकिन यह तय है कि हर चीज़ अल्लाह तआला के देने पर ही हासिल होगी। जैसेः ग़ल्ला उतना ही पैदा होगा जितना अल्लाह तआला चाहेगा, इसमें इन्सान कुछ नहीं कर सकता है, अगर ज़्यादा पैदा हो जाए तो अल्लाह इस बात पर भी क़ादिर है कि उसको तबाह कर दे। इसलिए किसान कभी यह नहीं कह सकता कि इस साल इतना ग़ल्ला पैदा होगा और बाग़बां यह नहीं कह सकता कि इस फ़सल में कितने फल आएंगे या नहीं आएंगे।

सूरह कहफ़ में इसी अक़ीदे की तश्रीह करते हुए अल्लाह तआला ने दो बाग़ वालों का वाक़्या बयान किया है। एक साहब का बाग़ बड़ा था और उसमें बहुत पैदावार होती थी। इस पर वह बहुत ख़ुश थे और अकड़ते थे कि यह सब हमारा है। एक दिन उन्होंने इरादा किया कि सुबह–सवेरे ही बाग़ चलकर फल तोड़ लाएंगे ताकि किसी को मालूम न हो, क्योंकि ज बवह फल तोड़ने जाते थे तो ग़रीब लोग मांगने आ जाते थे। इससे वह परेशान होते थे। इसीलिए उन्होंने सोचा कि सुबह ही जाकर तोड़ लाएंगे और उसके बाद देखेंगे कि ग़रीबों को देना है कि नहीं। उनके इस रवैये पर उनके एक दोस्त ने उनको समझाया कि देखो तुम अपनी दौलत पर ज़्यादा न अकड़ो, यह अल्लाह का मामला है और इसमें तुम अपनी अकड़ ज़्यादा न दिखाओ, अल्लाह तुमको नुक़सान भी पहुंचा सकता है। जैसा कि वह फ़ायदा पहुंचाता है। लेकिन वह उसकी बात न माना और फिर ऐसा ही हुआ कि ज बवह शख़्स सुबह को बाग़ में गया तो एक ज़ोर का

तूफ़ान आया और सबकुछ बर्बाद हो गया। उसको कुछ भी हासिल नहीं हो सका। इसके बाद उसको अपनी ग़लती पर अफ़सोस हुआ कि हमने वाक़ई ग़लती की है और हमने यह ख़्याल बिल्कुल नहीं किया कि सबकुछ अल्लाह तआला का दिया हुआ था।

इस सूरह में इस तरह के और भी कई वाक़्यात हैं जिनसे यह बताया गया है कि अल्लाह को जो आम बनाया हुआ निज़ाम है, उससे हटकर भी अल्लाह तआला निज़ाम चलाने पर क़ादिर है, जैसेः मोजज़ा उसे कहते हैं जो बने हुए निज़ाम के ख़िलाफ़ हो जाए। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का मोजज़ा यह था कि वह हाथ फेरते तो शिफ़ा हो जाती और अंधा बीना हो जाता था। ज़ाहिर है कि यह दवाई इलाज से नहीं हो सकता। यानि दुनिया का जो निज़ाम है उसके लिहाज़ से नहीं हो सकता। लिहाज़ा जब निज़ाम के ख़िलाफ़ कोई चीज़ होती है तो वह मोजज़ा हो जाती है और अल्लाह तआला अपने अम्बिया को मोजज़ात देता था, यह दिखाने के लिये कि अब तो लोग मान लें। अब तो नबी की दावत को तस्लीम कर लें। नबी ऐसी चीज़ दिखा रहा है जो इन्सान नहीं कर सकता। इसी तरह कुरआन मजीद को भी अल्लाह ने एक मोजज़ा बनाया है। यह ऐसा कलाम है कि इस जैसा कोई नहीं ला सकता। अरब के बड़े–बड़े शायर थे जिनको इस बात पर बहुत नाज़ था कि हम बहुत उम्दा ज़बान बोलते हैं, ऐसा ज़बान कोई नहीं बोल सकता। वह भी इस कलाम को देखकर हैरान हो गये और उनमें से किसी यह नहीं कहा कि हम ऐसा कलाम ला सकते हैं। जबकि कुरआन ने चैलेंज किया कि अगर तुम समझते हो कि यह अल्लाह का कलाम नहीं है तो ऐसा कलाम लाकर दिखाओ।

सूरह कहफ़ की शुरूआत ही में नुज़ूले कुरआन का मक़सद यूं ज़िक्र किया गया है कि यह किताब उन लोगों को सही बात बता दे जो ईमान ला रहे हैं। और इस हक़ीक़त को मान रहे हैं कि यह सारा निज़ाम अल्लाह का बनाया हुआ है और उसी के चलाने पर चल रहा है। सिर्फ़ यही नहीं कि उसने एक निज़ाम बनाकर किसी के सुपुर्द कर दिया है बल्कि वह निज़ाम पूरी तरह उसकी नज़र में भी है। इसमें वह तब्दीली भी कर सकता है। लिहाज़ा उन लोगों को अज्रे हसना की बशारत दे दें जो अमले सालेह करते हैं। यानि वह काम करते हैं जो अल्लाह को पसंद है। उनको अल्लाह क़यामत में ऐसा अज्र अता फ़रमायेगा कि वह उसमें हमेशा रहेंगे। वह अज्र कभी ख़त्म नहीं होगा। आप दुनिया में एतबार नहीं कर सकते कि कौन सी चीज़ कब तक आपके पास रहेगी और आप उसको कब तक इस्तेमाल कर सकते हैं। ख़ुद की ज़िन्दगी का एतबार नहीं है। लेकिन आख़िरत की ख़ूबी यह है कि वहां जो चीज़ मिलेगी वह हमेशा रहेगी, कभी ख़त्म नहीं होगी और ज़िन्दगी भी ख़त्म नहीं होगी। वहां यह ख़तरा नहीं होगा कि हम मर जाएंगे। और इसी तरह वहां जो चीज़ दी जाएगी वह भी हमेशा रहेगी।

सूरह कहफ़ का गोया बुनियादी मौज़ूअ यह है कि दो निज़ाम हैः एक निज़ाम अल्लाह के मातहत, और एक निज़ाम वह है जिसमें इन्सान ने अपने को ज़ाहिरी चीज़ों से सबकुछ समझ लिया है और इसके पीछे जो ताक़त व मक़सद है उसको मानने के लिये वह तैयार नहीं है। जबकि हक़ीक़त यह है कि दुनिया में अल्लाह तआला ने इन्सान को ख़लीफ़ा के तौर पर पैदा किया है ताकि वह दुनिया में निज़ाम चलाये और इस तरह चलाए जैसे वही ख़ुद चला रहा हो, हालांकि अल्लाह की तरफ़ से और अल्लाह की इजाज़त से वह निज़ाम चला रहा है। अस्ल में निज़ाम चलाने वाला वह ख़ुद नहीं है, बल्कि उसके पीछे एक दूसरी ताक़त है जो उस निज़ाम को चला रही है। अलबत्ता इन्सान को अल्लाह तआला ने इतना अख़्तियार दिया है कि वह इस निज़ाम को उसकी इजाज़त से चला सके। लेकिन इन्सान अस्ल नहीं है। इस सूरह के तमाम वाक़्यात में मादि्दयत और ईमान की कशमकश का ज़िक्र है, जिनके ज़रिये यह बताया गया है कि अस्ल और पाएदार तसव्वुर ईमानी तसव्वुर है, लिहाज़ा इन्सान को आख़िरत की फ़िक्र लाहिक़ रखनी चाहिये।

दीनी मदरसे और उनकी ज़िम्मेदारियाँ

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

बक़ाए अनफ़ा अल्लाह का एक बेलाग क़ानून है। यानि जो चीज़ नाफ़े है वह बाक़ी रहने वाली है। और जो उसके अलावा है वह बह जाने वाली और ग़ायब हो जाने वाली है लिहाज़ा जो जितना नफ़ा पहुंचाने वाला होगा वह उतना ही बाक़ी रहेगा। उतना ही मज़बूत रहेगा और उतना ही तवाना रहेगा। इसलिए बिलख़ुसूस अहले मदारिस को यह जायज़ा लेते रहने चाहिये कि कहीं हमारा नफ़ा कम तो नहीं हो रहा है। क्योंकि मदारिस नफ़ा पहुंचाने के मराकिज़ हैं। वह एक तरफ़ से लेते हैं और दूसरी तरफ़ दे देते हैं। वह वहां से लेते हैं जहां से कोई नहीं ले पाता और उनको देते हैं जो ले नहीं पाते। यानि जो ख़ास तौर पर से बराहे रास्त ले नहीं पाते उनको पहुंचाते हैं। अल्लाह तआला ने मदारिस के अन्दर यह सिफ़त रखी थी। लेकिन अब यह सिफ़त अहले मदारिस के अन्दर से ख़त्म होती चली जा रही है। और इसी वजह से उनपर लोगों की निगाहें उठ रहीं हैं। गोया जब तक हम नफ़ा वाले थे तो निगाहें उठने से दूर थे और जब नफ़ा कम हो गया या ख़त्म होता जा रहा है तो हालात ख़राब हो रहे हैं।

मदारिस के बहुत से काम हैं। नम्बर एक यह कि वह अस्ल मरकज़ से बिजली लेते हैं यानि बराहे रास्त कुरआन व हदीस से करन्ट हासिल करते हैं और उन से बिजली पैदा करते हैं और उस बिजली को पॉवर हाउस की हैसियत से रखते हैं। फिर सारी दुनिया में सप्लाई करते हैं। गोया मदारिस पॉवर हाउस हैं। लेकिन यह पावर हाउस उसी वक़्त बिजली पायेंगे, जब उनका कनेक्शन बराहेरास्त कुरआन व हदीस से होगा, वरना वही हाल होगा जो दूसरे मज़हबों का हुआ। यहूद व नसारा के साथ ऐसा ही हुआ कि उनका राब्ता आसमानी किताबों से कट गया और उन्होंने दूसरे ज़रियों से वाबस्तगी अख़्तियार कर ली। लिहाज़ा जब अस्ल से रिश्ता कट गया तो सप्लाई की एनर्जी कम हो गयी और उनका वह हाल हो गया जो आम तौर पर ऐसे लोगों का होता है जिनके पास कुछ नहीं होता है।

मदारिस का दूसरा अहम काम यह है कि मदारिस रूहानी शिफ़ाख़ाने हैं। ताकि यहां माद्दियत का मरीज़ आकर अपना इलाज करा सके। यहां हर तरह की दवा मिलती है। यहां हर तरह का आपरेशन होता है। यहां बड़े–बड़े केस आते हैं और मरीज़ शिफ़ा हासिल करके चले जाते हैं। इसलिए कि यहां बराहे रास्त कुरआन व हदीस से ऐसे मरीज़ा का इलाज किया जाता है और अहले मदारिस को बख़ूबी यह इल्म भी है कि समाज के किस तबक़े में इस तरह के इलाज की ज़रूरत है और वहां कौन सा नुस्ख़ा कारगर हो सकता है। लिहाज़ा अहले मदारिस को चाहिये कि वह समाज के हर तबक़े का जायज़ा लें कि कौन सा तबक़ा अख़्लाक़ियात का मरीज़ है। कौन सा तबक़ा सूद ख़ोरी का मरीज़ है। कौन सा तबक़ा हुकूकुल इबाद में कोताही का मरीज़ है और उसी के मुताबिक़ उस तबक़े का बेहतर इलाज करने की भी कोशिश करें। अगर ऐसा कर लिया जाये तो यह मदारिस हक़ीक़त में शिफ़ाख़ाने हों। यहां जो मरीज़ भी आ जाएं वह शिफ़ा पाकर ही निकलें। यह न हीं कि मदरसे में जाकर उल्टा मरीज़ हो जाएं। ऐसा न हो कि मदरसा गये थे और मदरसे ही का रोग लग गया। वाक़्या यह है कि मदारिस जिस तरह के शिफ़ाख़ाने होनाचाहिये वैसे नहीं हैं। मदारिस की वह तासीर ख़त्म हो गयी है। आज मदारिस ख़ुद मरीज़ हैं। उनको शिफ़ा की ज़रूरत है। काश कोई माहिर डॉक्टर हो जो पहले इन शिफ़ाख़ानों को ठीक करे।

मदारिस का तीसरा अहम काम यह है कि मदारिस इस्लाम के क़िले हैं। इस्लाम की पनाह गाहें हैं। अगर इस्लाम का कोई दुश्मन किसी इस्लाम वाले को भगा रहा हो तो वह मदरसों में आ जाए महफ़ूज़ हो जाएगा। यह नहीं कि मदरसों में आकर और नज़रो में चढ़ जाए कि यह गड़बड़ शख़्स है। यह दहशतगर्द है। ऐसा नहीं है बल्कि पनाहगाह पहुंचने के बाद किसी की हिम्मत नहीं कि कोई हाथ डाल सके। और कोई गज़न्द पहुंचा सके कि इसलिए कि फिर इसका ताल्लुक अल्लाह से होता है और अल्लाह की अब्दी किताब से होता है और अल्लाह का फ़रमान है: "हम ही ने इस नसीहत नामे को उतारा है और यक़ीनन हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।" ज़ाहिर है हमारा ताल्लुक़ अल्लाह की किताब से है और किताब की हिफ़ाज़त का मतलब यह कि जो चीज़ें उससे जुड़ी हैं उनकी भी हिफ़ाज़त की जाए।

हक़ीक़त में दीनी मदारिस इल्म के गहवारे हैं और इल्म की तासीर यह है कि .....शेष पेज 16 पर

क्रमवार:

एकेश्वरवाद क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मज़ाहिरे शिर्क से इज्तिनाब:

हज़रत अदी बिन हातिम से रिवायत है (फ़रमाते हैं) कि मैं रसूलुल्लाह स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मेरे गले में सोने का सलीब पड़ा हुआ था, रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया: अदी! इस बुत को (अपने गले से उतार कर) फेंक दो। मैंने आप स0अ0 को "सूरह बक़रा" की यह आयत पढ़ते सुना: "उन्होंने अल्लाह को छोड़कर आलिमों और राहिबों को खुदा बना लिया।"

फिर इरशाद हुआ: वह उनकी इबादत नहीं करते थे, लेकिन ज बवह किसी चीज़ कर देते तो यह लोग हलाल समझने लगते और जब किसी चीज़ को उन पर हराम करते तो यह हराम समझते।

हज़रत अदी बिन हातिम दरबारे रिसालत में तश्रीफ़ लाये और उनकी गर्दन में सोने की सलीब लटक रही थी। बज़ाहिर उनको मालूम नहीं था कि यह नाजायज़ है और शिर्क की बात है। वह सोने की सलीब थी। उनको अच्छी लगी इसलिए गर्दन में डाल लिया तो आप स0अ0 ने फ़रमाया: "ऐ अदी: इस बुत को उतार फेंको।"

गोया आप स0अ0 ने उसको बुत क़रार दिया। इसलिए कि सलीब शिर्क की एक अलामत है और शिर्क से मुताल्लिक़ जितनी भी चीज़ें हैं अगर उनमें अदना शिर्क का शाएबा भी है तो आप स0अ0 ने उससे मना फ़रमाया है। सलीब चूंकि ईसाईयों की एक अलामत है और उसमें शिर्क इस एतबार से है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में ईसाईयों का अक़ीदा है कि उनको फ़ांसी दी गयी, जिसकी उन्होंने एक ख़ास अलामत बना ली है और वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा समझते हैं और सलीब को उसकी एक अलामत समझते हैं, तो ज़ाहिर है कि वह शिर्क की एक अलामत है। इसीलिए आप स0अ0 ने इससे मना फ़रमाया।

यहीं से यह बात भी मालूम हुई कि जितने दूसरे मज़ाहिब हैं उनकी जो अलामतें हों, चूंकि वह अलामतें एक तरह के शिर्क से वाबस्ता हैं, इसलिए उन अलामतों से बचने की ज़रूरत है। हिन्दुओं के यहां सिन्दूर लगाते हैं, जनेऊ बांधते हैं और हाथ में लाल धागा बांधते हैं इत्यादि। ग़रज़ कि इस तरह के जो भी काम हैं जो उनकी मज़हबी पहचान हैं उन तमाम पहचानों से बचना ज़रूरी है। चाहें वह पहचाने यहूदियों के हों, ईसाईयों के हों या दूसरे मज़हबों के मानने वालों के हों। उनके जितने भी पहचान या अलामतें हैं उनको अख़्तियार करना गोया शिर्क की अलामत को अख़्तियार करना है और इसीलिए आप स0अ0 ने इसीलिए इन तमाम चीज़ों से मना फ़रमाया है।

इस सिलसिले में एक और अहम बात है जिसका मुसलमानों को ख़ास ध्यान रखना चाहिये। वह यह कि बाज़ारों में जो सामान मिलता है, उसमें आम तौर पर उसी तरह के धोखे होते हैं। इन सामानों पर कभी सलीब बनी होती है, कभी छः कोने का तारा बना हुआ होता है जो यहूदियों का निशान है, तो इसका ध्यान रहे कि आदमी कम से कम जानते–बूझते ऐसा कोई काम न करे कि वह शिर्क की अलामत को अपने घर में लाकर लटका ले, हासिल बहस यह कि इन चीज़ों से बचना ज़रूरी है।

अहले किताब और अहले इस्लाम में फ़र्क़:

हज़रत अदी बिन हातिम फ़रमाते हैं कि आप स0अ0 को मैंने यह आयत पढ़ते हुए भी सुना; "उन्होंने अपने उलमा और अपने बुज़ुर्गों को अल्लाह के अलावा रब बना लिया।"

यानि अहले किताब ने अपने उलमा और अपने दरवेशों को अल्लाह को छोड़कर अपना रब बना लिया। लिहाज़ा उन्होंने जो कहा वह उन लोगों को करना है चाहे वह शिर्क की बात हो या कुफ़्र की या इल्हाद की। यह वह बात अल्लाह तबारक व तआला की बताई हुई बातों से हट कर हो। उन्होंने बस यही समझा कि अस्ल यही हैं। जो कह देंगे दीन वही है। लेकि मज़हबे इस्लाम की जो तालीमात है उससे बिल्कुल हट कर हैं। इस्लाम यह कहता है कि किताब व सुन्नत अस्ल है और उलमा तरजुमान हैं। यह उलमा किताब व सुन्नत की तरजुमानी

करते हैं। अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहते। अगर कोई यह समझता है कि वह अपनी तरफ़ से कहते हैं और उनकी यह बात मानना लाज़िम है तो फिर यह बात शिर्क के क़रीब पहुंच जाएगी। दरहक़ीक़त इताअत अल्लाह की है। इताअत अल्लाह के रसूल स0अ0 की है। अलबत्ता उलमा की इताअत इसलिए है कि वह किताब व सुन्नत के तरजुमान हैं। वह अल्लाह और रसूल स0अ0 की बात बताते हैं। वह समझते हैं और ग़ौर करते हैं उसके बाद उसकी वज़ाहत करते हैं। इसलिए उलमा की बात मानी जाती है। इमामों की तक़लीद इसीलिए की जाती है कि हमारा यह यक़ीन है, इस बात को हम समझते हैं, और तर्जुबे से यह बात हमारे सामने आयी है कि हज़रात अइम्मा ने किताब व सुन्नत की तन्क़ीह के बाद, उसका ज़बरदस्त गहरा मुताला करने के बाद हमारे सामने मसाएल को रखा है। वह मसाएल उन्होंने अपने ज़हन व दिमाग़ से नहीं बयान कियें हैं, बल्कि वह मसाएल उन्होंने किताब व सुन्नत से बयान किये हैं और उसके लिये उन्होंने ज़बरदस्त मेहनत की है।

अइम्मा मुजतहिद्दीन की मेहनतें:

हज़रत इमाम शाफ़ई रह0 का मशहूर क़िस्सा है, हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रह0 के यहां एक बार तश्रीफ़ ले गये। इमाम शाफ़ई इमाम अहमद के उस्ताद थे, और हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रह0 ने अपने बेटों से उनका बड़ा तज़किरा कर रखा था कि हमारे एक बहुत ज़ी इस्तअदाद उस्ताद हैं। लिहाज़ा ज बवह तश्रीफ़ लाए तो उनके बेटे बड़े ख़ुश हुए कि आज एक बड़ी शख़्सियत की ख़िदमत का मौक़ा मिला है। ग़रज़ जब रात का वक़्त हुआ तो इमाम शाफ़ई रह0 को आराम करने की जगह बताई गयी और एक लोटे में पानी रख दिया गया कि अगर सुबह तहज्जुद के लिये उठेंगे तो वुज़ू कर लेंगे। चुनान्चे जब सुबह हुई तो उनके बेटे ने जाकर कहा; हज़रत! नमाज़ का वक़्त हो रहा है, लेकिन उन्होंने देखा कि लोटे में उसी तरह पानी रखा हुआ है जैसा रखा गया था, उस पर उनको बहुत ताज्जुब हुआ कि लगता है हज़रत अभी तक सो रहे हैं। तहज्जुद वग़ैरह में बेदार नहीं हुए। क्योंकि उस वक़्त भी वह चारपाई पर ही लेटे थे। फिर उसके बाद इमाम शाफ़ई रह0 उठे और सीधे मस्जिद चले गये। इमाम अहमद ने कहा; हज़रत नमाज़ पढ़ा दीजिए, वह फ़ौरन आगे बढ़ गये नमाज़ पढ़ाने के लिये, इधर उनके बेटे को बड़ा ताज्जुब हुआ कि वुज़ू भी नहीं किया और लगता है कि बिना वुज़ू के नमाज़ पढ़वा दी, आख़िर यह क्या क़िस्सा है!! फिर जब सब लोग नमाज़ से फ़ारिग हुए तो इमाम शाफ़ई रह0 से बातचीत शुरू हुई। बातचीत के दौरान इमाम शाफ़ई रह0 ने फ़रमाया: अबूअब्दुल्लाह! रात अजीब बात हुई, एक हदीस हमारे ज़हन में आयी और उसके बाद हमने उसके मसाएल से इस्तम्बात शुरू किया तो हम मसाएल का इस्तम्बात करते रहे और तक़रीबन सौ मसले निकाले, यहां तक कि फ़ज्र की अज़ान हो गयी, यह सुनने के बाद इमाम अहमद के बेटे को मालूम हुआ कि वह रात भर एक दूसरे काम ही में लगे हुए थे। गोया उम्मत की फ़िक्र में लगे हुए थे कि उम्मत के लिये उनको मसाएल का इस्तम्बात करना है। हज़रत इमाम मुहम्मद का मशहूर क़िस्सा है कि वह रात–रात भर जागते थे और मसाएल का इस्तमबात करते थे और अगर नींद आती थी तो टब में पानी भर कर बैठ जाते थे, अगर लोग कहते कि ऐसा क्यों करते हैं? तो फ़रमाते; लोग इस उम्मीद में सो रहे हैं कि मुहम्मद जाग रहा होगा, अगर मैं भी सो जाऊं तो उम्मत का क्या होगा?

इन वाक़्यात से अंदाज़ा होता है कि इन अइम्मा मुजतहिदीन की ग़ैर मामूली क़ुर्बानियां हैं। उन्होंने अपनी तरफ़ से बातें नहीं निकाली हैं, बल्कि उन्होंने किताब व हदीस को सामने रखकर मसाएल का इस्तिम्बात किया है। अल्लाह ने उनको ऐसे ज़बरदस्त ज़हन अता फ़रमाए थे कि वह दक़ीक मसाएल का इस्तम्बात कर सकते थे।

फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी:

उम्मते मुस्लिमा पर अल्लाह तबारक व तआला का एक ख़ास फ़ज़्ल है। जो फ़ज़्ल किसी उम्मत पर नहीं है। वह यह कि जब जैसे अफ़राद की ज़रूरत पड़ी अल्लाह ने उस तरह के अफ़राद उम्मत को अता किये। हज़रत मौलाना रह0 ने तारीख़ दावतो अज़ीमत में यह बात बहुत ताक़त के साथ लिखी है। इसके अलावा अगर हम और आप दोचीज़ों पर ख़ास तौर पर ग़ौर करें तो अंदाज़ा होगा कि इस उम्मत पर अल्लाह का ख़ास फ़ज़्ल हुआ है। वह यह कि पहले मरहले पर क़ुव्वेते हिफ़्ज़ की ज़रूरत थी ताकि अल्लाह के रसूल स0अ0 की जो हदीसें हैं उनका एक–एक नुक़्ता महफ़ूज़ हो जाए। और उसमें ज़रा भी कमी ज़्यादती न हो। तो उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआला ने लोगों को ग़ैर मामूली हाफ़िज़े अता फ़रमाए।

उस ज़माने के लोगों के हालात का मुताला किया जाए तो यक़ीन करना मुश्किल होता है।

हज़रत इमाम ज़हरी रह0 के बारे में आता है कि फ़रमाते थे कि मैं बाज़ार से गुज़रता हूं तो कान में रूई ठूंस लेता हूं ताकि वहां कि बातें मेरे कान में न पड़ जाएं क्योंकि जब कोई बात कान से सुन लेता हूं तो निकलती ही नहीं है और दिमाग़ में गर्दिश करती रहती है। इसी तरह एक और अजीब व ग़रीब वाक़्या है इस पर भी यक़ीन नहीं आता लेकिन अंदाज़ा होता है कि वाक़्यतनइ स उम्मत के साथ अल्लाह तबारक व तआला का ख़ास फ़ज़्ल है।

वाक़्या यह है कि एक बड़े मुहद्दिस थे, उनका तालिबइल्मी का दौर था। चुनान्चे ज बवह मस्जिदे नबवी में आए तो उन्होंने देखा कि दो जगह दर्स हो रहा है और दोनों जगह बड़े अल्लामा हैं जो हदीसें बयान कर रहे हैं। वह परेशान हुए कि मैं क्या करूं। किसके पास जाकर बैठूं। इधर बैठूंगा तो उनकी हदीसें छूटेंगी और उधर बैठूंगा तो उनकी हदीसें छूटेंगी। लिहाज़ा बहुत सोचने के बाद वह बीच में जाकर बैठे और एक कान से इनकी हदीसे सुन रहे थे और एक कान से उनकी हदीसे सुन रहे थे। और अजीब बात यह है कि जब दोनों के दर्स ख़त्म हुए और उनके शागिर्दों से उन्होंने मुज़ाकिरा किया तो मन व अन दोनों की हदीसें सुना दीं। इससे साफ़ मालूम होता है कि इस उम्मत पर यह अल्लाह तबारक व तआला का ख़ास फ़र्ज़ है और आंहज़रत स0अ0 का ऐजाज़ है। अल्लाह तआला को यह दीन बाक़ी रखना था तो अल्लाह तआला ने ऐसे असबाब पैदा किये जिनसे हिफ़ाज़त का सामान हो सके।

खुलासाए कलाम यह है कि एक ज़माना था जब कूव्वते हिफ़्ज़ की ज़रूरत थी तो अल्लाह तआला ने ऐसे अफ़राद पैदा कर दिये जिनके हालात वाक़्यात से मालूम होता है कि कूवते हिफ़्ज़ के ख़ारिक़ आदत वाक़्यात हैं। इन पर यक़ीन करना मुश्किल है। लेकिन जब इसकी ज़रूरत थी तो अल्लाह तआला ने कूवते हिफ़्ज़ फ़रमायी। और उसके बाद जब इसतम्बात की ज़रूरत पड़ी तो ऐसे अज़कियाऐ आलिम पैदा कर दिये। ऐसे ज़हीन लोग पैदा कर दिये कि मैं समझता हूं कि तारीख़ में ऐसे ज़हीन लोग मिलना मुश्किल है। इमाम अबू हनीफ़ा जैसा आदमी जिनके बारे में इमाम मालिक कहते थे कि अगर वह सुतून को सोने का साबित करना चाहें तो साबित कर दें। इन जैसे ज़हीन लोग पैदा किये। उन्होंने किताब व सुन्नत को सामने रखकर मसाएल का इस्तम्बात किया। उनका यही काम था। उन्होंने अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कहा। लिहाज़ा इस बात को समझने की ज़रूरत है कि हमारे यह अल्लाहमा और हमारे यह अइम्मा, यह दरअस्ल किताब व सुन्नत के तरजुमान होते हैं, यह अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं कहते।

गुमराह कुन रविश

मज़कूरा हदीस में जो बात आप स0अ0 ने कुरआन की ज़बानी इरशाद फ़रमायी कि "उन्होंने अपने अल्लामा और अपने बुज़ुर्गों को अल्लाह के अलावा रब बना लिया।"

यह यहूदों का तरीक़ा था। ईसाईयों का तरीक़ा था। लेकिन इस उम्मत का यह तरीक़ा न रहा है और न अब है। लेकिन बहुत से गुमराह लोग है जो इस पर गोया यक़ीन रखते हैं। बहुत से इलाक़ों में मालूम हुआ कि पीर साहब गये और जाकर नमाज़े माफ़ कर दीं। कहीं रोज़े माफ़ कर दिये। कहीं अपनी तरफ़ से कुछ बात निकाल दी। ज़ाहिर है यह तो वही बात हो गयी कि जो अक़ीदा ईसाइयों और यहूदियों का था वही अक़ीदा इस उम्मत के बाज़ लोगों में पैदा हो गया। याद रहे कि यह भी एक तरह का शिर्क है कि किसी आलिम को आदमी शारेअ समझे। वह यह यक़ीन करे कि वह जो कहेंगे वह शरीअत है। मालूम होना चाहिये किसी का कहा शरीअत नहीं है। अल्लामा शरीअत की बात कहते हैं, शरीअत की तरजुमानी करते हैं और अगर कोई आलिम शरीअत की तरजुमानी नहीं कर रहा है तो उससे हमारा कोई ताल्लुक़ नहीं है। हमारा ताल्लुक़ किसी आलिम से सिर्फ़ इसलिए है कि वह शरीअत का तरजुमान है। अब अगर कोई आलिम ग़लत बात कह रहा है तो हम उसकी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे।

एक ज़रूरी वज़ाहतः

मज़कूरा हदीस में आप स0अ0 ने इसकी वज़ाहत भी फ़रमा दी कि अहले किताब ने इनको मुतलक़ रब नहीं बनाया था। रब बनाने का मतलब यह नहीं था कि वह उनकी परस्तिश करते थे, उनकी बन्दगी करते थे, लेकिन उनका तरीक़ा यह था कि जब उनके अल्लामा किसी चीज़ को हलाल कर देते तो वह हलाल हो जाती और जब किसी चीज़ को हराम कर देते तो वह हराम हो जाती। जबकि किसी चीज़ को हराम करने का अख़्तियार उनको नहीं है या किसी चीज़ को हलाल करने का अख़्तियार उनको नहीं है। उनका काम तो सिर्फ़ इतना है कि जो कहा गया है उस बात को वाज़ेह तरीक़े पर ऐसे लोगों के सामने बयान कर दें जो नहीं समझ रहें हैं ताकि उनके लिये समझना आसान हो जाए। इससे आगे कोई दूसरा काम नहीं है।

आदमियत का एहतराम

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

"और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दारेज़ हो गये सिवाय इब्लीस के, उसने नहीं माना और तकब्बुर किया और काफ़िरों में हो गया।"

बिला शुब्हा यह आयत आदमियत और शर्फ़े इन्सानियत की अब्दी दलील है। अल्लाह ने ख़ुद ही तमाम फ़रिश्तों में आदम की बालादस्ती साबित की। फिर अपनी क़ाबिले तकरीम मख़लूक़ फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि सबके सब आदम सज्दा रेज़ हो जाएं। बग़ैर किसी इस्तसना के तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया। बल्कि इन्सान की पैदाइश से पहले ही ऐलाने ख़ुदावन्दी हो चुका था कि मैं एक नई मख़लूक़ पैदा करने वाला हूं जब उसे पैदा कर चुकुं तो तुम सब सज्दारेज़ हो जाना। जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक इन्सान पैदा करने वाला हूं, जब मैं उसे दुरूस्त कर दूं और अपनी तरफ़ से उसमें रूह फूंक दूं तो तुम उसके लिये सज्दे में गिर पड़ना।

इन आयात को मिलाया जाए तो यह बात मालूम होती है कि मलाएका को आदम के सज्दे का हुक्म दो दफ़ा दिया गया। एक मर्तबा पैदाइश से पहले, दूसरी दफ़ा पैदाइश के बाद। तख़लीक़े इन्सान का तज़किरा जिस एहतिमाम से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने मुक़द्दस कलाम में जा–बजा फ़रमाया है, वह बजाए ख़ुद शर्फ़े इन्सानियत की बैन दलील है। जब इब्लीस ने सज्दा नहीं किया तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन अल्फ़ाज़ में उसे फ़टकारा वह इन्सानियत के लिये वह इन्सानियत के लिये बाइसे हज़ार नाज़ व सद इफ़्तिख़ार है। ऐ इब्लीस इस मख़लूक़ को सज्दा करने से क्या चीज़ माने बनी जिसे मैंने अपनी दोनों हाथों से पैदा किया है।

बस मर मिटने वाला उस्लूब है कि ऐसा अंदाज़े बयान किसी और मख़लूक़ की पैदाइश के लिये कहीं नज़र नहीं आता। यह ऐजाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्सान के हिस्से में आया है।

इन्तिहाई आजिज़ी के साथ झुकने को सज्दा कहते हैं। इसकी इन्तिहा यह है कि अपने चेहरों को ज़मीन पर रख दिया जाए। यह इबादत व बन्दगी क इन्तिहाई शक्ल है। बाज़ हज़रात ने यह बताने की कोशिश की है कि फ़रिश्तों का सज्दा दरअस्ल अल्लाह के लिये था और हज़रत आदम को क़िब्ला की हैसियत दी गयी थी। लेकिन अरबियत की ज़ौक़ और अल्फ़ाज़े कुरआनी इसकी साफ़ नफ़ी करते हैं, सज्दा हज़रत आदम ही के लिये था और अल्लाह के हुक्म से ही किया गया था। यह सज्दा इबादत न था बल्कि सज्दाए एहतिराम व तकरीम था जिसके ज़रिये अल्लाह अपनी नौ पैदा शुदा मख़लूक़ की अहमियत व हैसियत वाज़ेह करना चाहता था। साबिक़ा बाज़ उम्मतों में इस तरह के सज्दों की इजाज़त थी। ख़ुद कुरआन ने हज़रत यूसुफ़ के ताल्लुक़ से गवाही दी है कि बादशाह बनने के बाद जब आपके भाई दरबारे शाही में पहुंचे तो सब सज्दे में गिर पड़े। इस आख़िरी उम्मत को अक़ीदे की हर ख़राबी से पाक व साफ़ रखने के लिये अल्लाह तआला ने उसके लिये हर तरह का सज्दा हराम किया है। सज्दाए इबादत तो खुला हुआ शिर्क है। सज्दाए ताज़ीमी भी इसलिए शदीद हराम रखा गया कि कहीं यह आइन्दा सज्दाए इबादत का ज़रिया न बन जाए। हो सकता है कि इसी अश्काल से बचने के लिये बाज़ मुफ़स्सिरीन का ज़हन इस तरफ़ गया हो िकइस सज्दे को सज्दाए एहतिराम व तकरीम न क़रार दिया जाए और उसे सिर्फ़ हज़रत आदम की तरफ़ रुख़ करके उनको क़िब्ला की हैसियत देकर सज्दा करना क़रार दिया जाए। इसका जवाब यह है कि वहां हुक्म देने वाला बराहरास्त अल्लाह तआला है। अल्लाह जिसके लिये जो चाहे हुक्म दे। उस उम्मत पर ग़ैरुल्लाह के लिये हर क़िस्म के सज्दे को हराम करने वाला भी अल्लाह ही है। उसका जब जो हुक्म है उसकी फ़रमाबरदारी करना अस्ल बन्दगी है। लिहाज़ा जब इससे कोई अश्काल ही नही ंतो ख़्वाहमख़्वाह एक ख़ुद साख़्ता इश्काल पैदा करके उससे बचने के लिये किसी ज़बरदस्ती की तावील की कोई ज़रूरत नहीं है।

मज़कूरा आयत में है कि फ़रिश्तों को जैसे ही सज्दे का हुक्म मिला वह फ़ौरन सज्दे में चले गये। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को अपने एहकामात की ऐसे ही तकमील पसंद है। हुक्मे इलाही के बाद फिर फ़ौरन तामीले हुक्म क्या, क्यों और कैसे का सवाल ही नहीं। इब्लीस इसी अगर–मगर के चक्कर में मारा गया और हमेशा के लिये रांजे दरगाह हुआ। आज भी कुछ ऐसे अहमक़ रौशन

ख़्याल पाये जाते हैं जो सरीह हुक्मे इलाही के बाद क्यों और कैसे के चक्कर में पड़कर अपनी आक़िबत ख़राब कर रहे हैं। वह दरपरदा इब्लीसी किरदार अदा कर रहे हैं।

इब्लीस यानि सबसे बड़ा शैतान जो अल्लाह की नाफ़रमानी और अपने तकब्बुर की वजह से शर और बदी की सबसे बड़ी अलामत बन गया और हमेशा के लिये अल्लाह की रहमत से महरूम कर दिया गया। तकब्बुर दिमाग़ी मर्ज़ है। और तकब्बुर की वजह से होने वाले गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ कम मिलती है। उसके मुक़ाबले में नफ़सानी ख़्वाहिश से मग़लूब होकर किया जाने वाला गुनाह अख़लाक़ी मर्ज़ है। इन गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ निस्बतन ज़्यादा मिलती हैं बाक़ी गुनाहों की हैसियत से इन्सान की ज़िम्मेदारी यह है कि हर तरह की मासियत से बचने की फ़िक्र करे।

इब्लीस के हवाले से बाज़ हज़रात ने यह लिखा है कि यह भी फ़रिश्ता था इसका नाम अज़ाज़ील था। अल्लाह की खुली नाफ़रमानी की वजह से इस पर फिटकार बरसी और यह शैतान बना दिया गया। बाज़ हज़रात ने यह भी लिखा है कि जिस तरह हज़रत आदम तमाम इन्सानों के जद्दे अमजद हैं उसी तरह इब्लीस सबसे पहले जिन्न हैं जिनसे जिन्नात की नस्ल चली।

बाज़ हज़रात ने हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से बताया है कि इब्लीस जन्नत के ज़िम्मेदारों में था और आसमाने दुनिया के फ़रिश्तों का सरदार था। इबादत और इल्म में बहुत फ़ायक़ था। अपने इसी शर्फ़ व इज़्ज़त की वजह से उसके ज़हन में बड़ाई का ख़्याल आया जिसका इज़हार अल्लाह की नाफ़रमानी की शक्ल में हुआ। लिहाज़ा मलाइका की जमाअत से निकाल दिया गया और मस्ख़ करके शैतान बना दिया गया। इब्लीस के फ़रिश्तों की जमाअत में होने से मुताल्लिक़ जितनी बातें की गयीं हैं वह किसी सही हदीस सेसाबित नहीं हैं और हज़रत इब्ने अब्बास की तरफ़ मन्सूब अक़वाल की सनद भी ज़ईफ़ है। एक निहायत ज़ईफ़ बल्कि मौजूअ रिवायत में इब्लीस के फ़रिश्ता होने की बात आयी है। उसके मुक़ाबले में क़ुरआने करीम और सही रिवायात सेयह बात मालूम होती है कि इब्लीस जिन्नात में था। आग से बनाया गया था। फ़रिश्तों को जिस तरह ख़ा समक़ामक़ुर्ब हासिल होता है, उसे भी एक ख़ा समक़ाम हासिल था। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से हसद में मुब्तिला हो गया। अल्लाह से नाफ़रमानी की और हमेशा के लिये फटकारा गया। बाक़ी मलाएका की सरदारी की बात या इब्लीस के अव्वलीन जिन्न होने की बात है यह मुमकिन तो है लेकिन कोई यक़ीनी बात नहीं। रसूलेअकरम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि फ़रिश्ते नूर से पैदा हुए और इब्लीस को सख़्त तपिश वाली आग से पैदा किया गया और आदम अलै0 को जिस चीज़ से पैदा किया गया उसके बारे में तुम्हें बताया जा चुका है यानि मिट्टी से।

बाज़ हज़रात ने यह अक़्ली इस्तदलाल किया है कि आदम को सज्दे का हुक्म फ़रिश्तों को दिया गया था, जब इब्लीस फ़रिश्तों में नहीं था तो फिर सज्दा न करने पर इताब क्यों हुआ। लिहाज़ा वह फ़रिश्तों ही में था, उसका जवाब बाज़ हज़रात ने यूं दिया है कि मलाएका के साथ रहते–रहते वह भी उन्हीं में का एक फ़र्द समझा जाता था, लिहाज़ा हुक्म में वह भी बराहेरास्त शामिल हो गया। लेकिन उससे बेहतर क़ुरानी जवाब यह है कि ख़ुद इब्लीस को भी सज्दा करने का हुक्म था चाहे मलाएका के साथ शामिल मानकर हो या बराहे रास्त हो। इरशाद है:

"तुझे सज्दा करने में क्या रुकावट पेश आयी जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया।"

लिहाज़ा सज्दा न करने पर इताब को बुनियाद बनाकर उसके फ़रिश्ता होने का इस्तदलाल दुरुस्त नहीं। जिस तरह फ़रिश्ते मामूर थे वह भी मामूर था।

मज़कूरा आयत एहकामे इलाही के बाब में बहु त मोहतात रहने पर ज़ोर देती है। बज़ा अवक़ात बरसों की इबादत व रियाज़त तकब्बुर के एक झटके में ख़त्म हो जाती है। अल्लाह महफ़ूज़ रखे इस तरह बज़ा अवक़ात ईमान का शोला इस तरह लपकता है कि ज़िन्दगी के सारे गुनाह धुल जाते हैं। फ़िरऔन के जादूगर हज़रत मूसा से मुक़ाबला करने के लिये आये थे। ज़िन्दगी पूरी जादू जैसे ग़लीज़ अमल में गुज़री थी। हज़रत मूसा के मोजज़े ने दिल की आंखें रोशन कर दीं। उसकी एक किरन ने ईमान की वह शमा रौशन की कि लाख फिरऔन ने धमकियां दीं लेकिन ईमान का जादू जो सर चढ़ कर बोला जो जामे शहादत से कम किसी मर्तबे पर राज़ी न हुआ।

नमाज़–ए–जनाज़ा के एहकाम

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

नमाज़–ए–जनाज़ा के अरकानः

नमाज़–ए–जनाज़ा के फ़राएज़ दो हैंः

चार तकबीरें, इसलिये चार से कम तकबीरें कहीं और सलाम फेर दिया तो नमाज़ नहीं होगी। हां अगर भूले से ऐसा हुआ और किसी नमाज़ के नकारात्मक अमल के पेश आने से पहले एहसास होते ही उसने चौथी तकबीर कह ली तो नमाज़ हो जाएगी। सज्दा सहू की आवश्यकता नहीं होगी। (हिन्दिया : 1/165)

अगर भूले से इमाम ने पांचवी तकबीर कह दी तो मुक़्तदी को इस तकबीर में इमाम की इक़्तिदा नहीं करनी चाहिये, इमाम के साथ सलाम फेरे, नमाज़ सही हो जाएगी। (फ़तावा तातारख़ानिया : 3/46)

क़याम (नमाज़ खड़े होकर पढ़ना) इसलिये दूसरी फ़र्ज़ नमाज़ों की बिना कारण बैठकर या सवार होकर नमाज़–ए–जनाज़ा भी ठीक नही हैं। (शामी : 1/641)

हां यदि किसी वजह से बैठकर या सवार होकर नमाज़ प ना ठीक होगा। (शामी : 1/641)

नमाज़–ए–जनाज़ा की सुन्नतेंः

इस नमाज़ में तीन चीज़ें सुन्नत हैंः

1– अल्लाह की हम्द करना।

2– दरूद शरीफ़ पढ़ना।

3– मरने वाले के लिये दुआ करना।

नमाज़–ए–जनाज़ा की सुन्नतेंः

अगर इस्लामी हुकूमत हो तो उस समय का सुल्तान अगर नमाज़ में हो तो इमामत के लिये उसी का बढ़ना वाजिब होगा। वह न हो तो उसके नायब (यानि गवर्नर या शहर का अमीर) को बढ़ना होगा। फिर क़ाज़ी को। फिर कोतवाल को। फिर नायब कोतवाल को। फिर नायब क़ाज़ी को। इन लोगों का निम्नलिखित तफ़सील और क्रम के अनुसार बढ़ना वाजिब होगा चाहे इल्म या तक़्वे में उनसे बड़े लोग ही क्यों न मौजूद हों। (हिन्दिया : 1/163)

लिहाज़ा इन हुकूमती अहलकारों से जनाज़ा पढ़ाना मुमकिन न हो तो मुहल्ले की मस्जिद के इमाम का बढ़ना मुस्तहब और अफ़ज़ल है। ज़रूरी नहीं है और यह भी उस वक़्त है जब मैय्यत के औलिया में कोई उससे अफ़ज़ल न हो। इसलिये मैय्यत के संबंधियों में कोई इससे बेहतर हो तो उसे बढ़ना चाहिये। (हिन्दिया : 1/163)

फिर असबात (रिश्तेदार) के क्रम के अनुसार वली अक़रब (क़रीबी रिश्तेदार) को नमाज़ पढ़ाने का हक़ होगा और यहां उसकी तरतीब यह होगी कि हक़ सबसे पहले बाप को होगा, फिर बेटे को... क्रमानुसार अन्त तक।

अगर जनाज़ा किसी औरत का हो तो और उसके असबात में से कोई मौजूद न हो तो यह हक़ शौहर को होगा। इसके बाद पड़ोसी उसके हक़दार होंगे।

(शामी : 1/649, हिन्दियाः 1/163)

इमामत के विभिन्न मसलेः

1– मरने वाला अगर किसी ख़ास व्यक्ति को अपनी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने के लिये निश्चित करे तो उसकी यह निश्चितता और वसीयत अमान्य होगी और वली को अधिकार होगा कि उसी से नमाज़ पढ़वाये या किसी और से।

2– जिसको इमामत का अधिकार हो वह दूसरे व्यक्ति को इमामत के लिये बढ़ा सकता है।

3– अगर एक दर्जे के दो वली आ जाएं तो इमामत का हक़ दोनों में से ज़्यादा उम्र वाले को होगा।

4– अगर वली की आज्ञा के बिना ख़लीफ़ा–ए–वक़्त, गर्वनर, सुल्तान, क़ाज़ी या मुहल्ले की मस्जिद के इमाम ने नमाज़ पढ़ा दी है तो वली को दोबारा नमाज़ पढ़ाने की इजाज़त नहीं होगी और अगर उन लोगों के अलावा किसी ने नमाज़ पढ़ा दी है तो वली को दोबारा नमाज़ पढ़ाने की आज्ञा होगी।

5– वली नमाज़ पढ़ लेने के बाद किसी को नमाज़ के दोहराने की इजाज़त नहीं है। यहां तक कि इसी के दर्जे के दूसरे औलिया मौजूद हों, तब भी उन्हें दोहराने की इजाज़त नहीं होगी।

नमाज़–ए–जनाज़ा को तोड़ने वाली चीज़ेंः

नमाज़–ए–जनाज़ा को ख़राब करने वाली चीज़ें भी वही हैं जो दूसरी नमाज़ों की हैं। जैसेः

1. बातचीत कर लेना।
2. सलाम कर लेना।
3. ज़बान से सलाम का जवाब दे देना।
4. बिना वजह खंखारना।
5. लोगों की बातों से मिलती–जुलती कोई दुआ करना।
6. कराहना उफ–उफ़ या आह–आह करना।
7. आवाज़ से किसी मुसीबत या तकलीफ़ पर

रोना। (जन्नत–जहन्नम की याद में रोना नमाज़ को ख़राब करने वाली चीज़ नही हैं)

8. छींकने वाले को "यरहुमुकल्लाह" कहना।

9. अमल–ए–कसीर करना इत्यादि।

लेकिन नमाज़ जनाज़ा में औरत की महाज़ात (अगल–बग़ल) से नमाज़ ख़राब नहीं होगी।

वे जगहें जहां नमाज़–ए–जनाज़ा मकरुह है:

1– जिस मस्जिद को पांच वक़्त की नमाज़ या जुमा की नमाज़ के लिये बनाया गया हो वहां नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मकरूह है। चाहे मस्जिद और नमाज़ी दोनों मस्जिद के अन्दर हों या मैय्यत मस्जिद के बाहर हो और लोग मस्जिद के अन्दर हों या मैय्यत मस्जिद के अन्दर हो और इमाम और बाक़ी लोग मस्जिद के बाहर हों।

यद्यपि बारिश, भीड़, वली के हालत–ए–एतकाफ़ में होने जैसे किसी कारण के आधार पर मस्जिद में नमाज़ पढ़ना जाएज़ होगा।

जहां तक मस्जिद–ए–हराम का संबंध है तो वह इस हुक्म से अलग है। इसलिये कि वो पांच वक़्त के नमाज़ियों के अलावा दूसरी चीज़ों के लिये भी बनायी गयी है।

2– रास्ते में नमाज़–ए–जनाज़ा पढ़ना।

3– लोगों की ज़मीन पर नमाज़–ए–जनाज़ा पढ़ना।

नमाज़–ए–जनाज़ा का तरीक़ा:

नमाज़–ए–जनाज़ा का तरीक़ा यह है कि जनाज़े को आगे रखकर इमाम मरने वाले के सीने के सामने खड़ा हो जाए और अफ़ज़ल यह है कि बाक़ी के नमाज़ी तीन सफ़ में खड़े हो जाएं, सात लोग हों तब भी एक इमाम बने, तीन उसे बाद खड़े हों, उसके बाद दो खड़े हों, आख़ीर में एक खड़ा हो।

फिर इमाम और नमाज़ी ये नियत करें:

"क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके इमाम की इक़्तदा में अल्लाह की इबादत और मरने वाले के लिये दुआ के वास्ते इस फ़र्ज़ की अदायगी की नियत करता हूं।"

और अगर सिर्फ़ दिल में इरादा कर ले कि वह यह नमाज़ पढ़ने जा रहा है तो भी काफ़ी होगा।

नियत के बाद दोनों हाथ तकबीर तहरीमा की तरह कानों तक उठाकर एक बार....

"अल्लाहु अकबर" कहे,

और दूसरी नमाज़ की तरह हाथ बांध ले, फिर:

''सुब्हान कल्लाहुम्मा वबिहम्दिका.....'' आख़िर तक पढ़े। फ़िर बग़ैर हाथ उठाए हुए "अल्लाहु अकबर" कहे, (कई इलाक़ों में ''अल्लाहु अकबर'' कहते हुए सर उठाते हैं, यह साबित नहीं है) और दरूद शरीफ़ पढ़े। बेहतर यह है कि दरूद इब्राहीमी पढ़े (जो कि नमाज़ में पढ़ा जाता है)

दरूद शरीफ़ पढ़ने के बाद बग़ैर हाथ (या सर) उठाए तीसरी बार अल्लाहु अकबर कहे और मरने वाले के लिये कोई दुआ करे, बेहतर यह है कि असरदार दुआओं में से कोई दुआ पढ़े।

व्यस्क मरने वाले के लिये दुआ

इस मौक़े की कुछ दुआंए निम्नलिखित हैं:

''या अल्लाह! हमारे ज़िन्दा–मुर्दा, मौजूद–ग़ैर मौजूद, छोटे–बड़े, मर्द व औरत (सब की) मग़फ़िरत फ़रमा, या अल्लाह हममें से जिसको ज़िन्दा रखना हो उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और जिसे मौत देनी हो उसे ईमान पर उठा।''

ये दुआंए भी पढ़ सकते हैं:

''या अल्लाह! इसकी मग़फ़िरत फ़रमा, इसकी नुमायां मेज़बानी फ़रमा, उसकी क़ब्र को वसी फ़रमा, इसको पानी, बर्फ़ और ओला, से नहला दे, और इसकी ख़ताओं से इसको इस तरह पाक कर दे जैसे सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ किया जाता है और इसके घर से बेहतर घर और इसके घरवालों से बेहतर घर वाले और इसके जोड़े से बेहतर जोड़ा बदला में अता फ़रमा और इसको जन्नत में दाख़िल फ़रमा और अज़ाब–ए–क़ब और दूसरे अज़ाबों से और जहन्नम से पनाह दे।''

और चाहें तो दोनों को मिला कर भी पढ़ सकता है इसलिये शामी में दोनो दुआएं मिलाकर ही लिखी हुई हैं।

नाबालिग़ लड़के के लिये दुआ

अगर मरने वाला नाबालिग़ हो तो ये दुआ पढ़े:

''या अल्लाह! इसको हमारे लिये हौज़–ए–क़ौसर पर सबक़त करने वाला बना दे और इसको हमारे लिये अज्र व सवाब का कारण बना और भण्डार बना दे और इसको हमारे लिये शफ़ाअत करने वाला और शफ़ाअत याफ़ता (शफ़ाअत क़ुबूल किया हुआ) बना दे।''

नाबालिग़ लड़की के लिये दुआ

मरने वाली नाबालिग़ लड़की हो तो इसी दुआ को इस तरह पढ़ा जाएगा:

"अल्लाहुम्मजअलहा लना फ़रतन वअजअलहा लना अजरन व ज़ुख़रन वजअलहा लना शाफ़िअतन व मुशफ़्फ़अतन"

जब दुआ मांग ले तब चौथी बार हाथ और सर उठाए बग़ैर तकबीर कहे और कोई दुआ पढ़े बग़ैर सलाम फेर दे।

क्या मुसलमान सियासी अछूत बना दिये गये हैं?

जनाब सुहैल अन्जुम

राजनीति में विशेष रूप से चुनावी राजनीति में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। कभी किसी पार्टी का वर्चस्व होता है तो कभी किसी पार्टी का। कभी कोई नारा काम कर जाता है तो कभी कोई। कभी कोई नज़रिया मज़बूती के साथ उभर कर सामने आता है तो कभी कोई। लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि चुनावी राजनीति में हमेशा एक वज़न रखने वाला सम्प्रदाय अचानक बेवज़न हो जाए या उसे राजनीतिक रूप से अछूत बना दिया जाए। यदि किसी देश में ऐसा होता है तो इसका मतलब यह होगा कि कोई बहुत बड़ा खेल हुआ है या फिर केवल राजनीतिक लाभ की ख़ातिर उस सम्प्रदाय को बर्फ़ में लगा दिया गया है। भारत में पिछले कुछ सालों में और विशेषतयः पिछले चार सालों के दौरान एक ऐसा बड़ा किन्तु राजनीतिक रूप से इन्तिहाई ख़तरनाक खेल खेला गया है जिसके कारण भारतीय मुसलमान जो कि हमेशा राजनीतिक रूप से एक ताक़त रहे हैं और चुनाव के दौरान हर राजनीतिक पार्टी उनका समर्थन पाने के प्रयास में रहती थी, अचानक अछूत बना दिये गये है। अब तो वे पार्टियां भी उनका नाम लेने से घबराती हैं तो स्वयं को मुसलमानों के मसीहा के तौर पर पेश करती थीं और मुसलमान भी बड़ी संख्या के साथ उनका समर्थन करते थे।

आज़ादी के बाद मुसलमानों ने सामूहिक रूप से कांग्रेस पार्टी का साथ दिया। कभी–कभार किसी इलाक़े में उन्होंने किसी दूसरी पार्टी को वोट दिया तो वह अलग मामला है लेकिन हक़ीक़त यह है कि वे कांग्रेस का वोट बैंक रहे हैं और कांग्रेस भी उन्हें अपना वोट बैंक समझती रही है। हालांकि यह भी एक कड़वा सच है कि कांग्रेस के दौर में हज़ारों मुस्लिम विरोधी दंगे हुए और मुसलमानों को गाजर–मूली की भांति काटा गया। उनके साथ सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर अन्तर किया गया। सरकारी नौकरियों में एक हिकमते अमली के तहत उनकी संख्या कम से कम की जाती रही। उनके नाम पर स्कीमें और सुधार के प्रोजेक्ट तो बनाए जाते रहे लेकिन उन पर कभी संजीदगी से अमल नहीं किया गया। यूपीए सरकार ने मुसलमानों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक स्थिति का जायज़ा लेने के लिये सच्चर कमेटी का निर्माण किया जिसने अपनी रिपोर्ट में मुसलमानों की वास्तविक परिस्थिति दुनिया को दिखाई लेकिन उसकी सिफ़ारिशों पर भी गंभीरता से अमल नहीं किया गया।

मुसलमान आज़ादी के बाद तमाम नाइन्साफ़ियों के बावजूद कांग्रेस का साथ देते रहे। उन्होंने 6 दिसम्बर 1992 तक उसका साथ दिया लेकिन उसके बाद वह उससे नाराज़ हो गये और बरसों तक नाराज़ रहे। अब जबकि धीरे–धीरे उनकी नाराज़गी कम होती जा रही है और वह कांग्रेस के क़रीब फिर आने के लिये ख़ुद को तैयार करने लगे हैं तो कांग्रेस ने ख़ुद को मुसलमानों से दूर कर लिया है। वह आर एस एस तथा भाजपा की ओर से बुने गये एक ऐसे राजनीतिक जाल में फंस गयी है जिससे वह बाहर निकलना भी चाहे तो नहीं निकल सकती है। इसने ख़ुद को इस जाल से बाहर निकालने के लिये वही तरीक़े अपनाने शुरू कर दिये जो बीजेपी या मोदी ने अपनाए थे। कांग्रेस अब दोबारा देश के राजनीतिक पटल पर आने हेतु मुसलमानों का साथ छोड़ने तक को तैयार हो गयी है। यूं तो यह बातें हमेशा होती रही हैं कि कांग्रेस बीजेपी की बी टीम है और बहुत से कांग्रेसी नेताओं ने अपनी धोती के अन्दर आरएसएस की नेकर पहन रखी है। लेकिन किसी ने भी खुलकर इस तरह वह बात नहीं कही जो पिछले दिनों कांग्रेस की अध्यक्षा सोनिया गांधी ने कही। हालांकि सोनिया गांधी के सेक्यूलर राजनीतिक दृष्टिकोण पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता, उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की कि उनकी पार्टी मुसलमानों की हमदर्द या वफ़ादार नहीं है।

उन्होंने 9 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित इन्डिया टुडे कॉन्क्लेव में एक इन्टरव्यू के दौरान कहा था कि, "बीजेपी ग़लत तरीक़े से जनता को यह समझाने में सफल हो गयी है कि कांग्रेस एक मुस्लिम पार्टी है और कांग्रेस लीडरों का मन्दिरों का दौरा उस भ्रान्ति को समाप्त करने का एक प्रयास है।" इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि मेरी पार्टी में हिन्दु बहुत अधिक संख्या में हैं लेकिन दूसरे वर्ग भी हैं और मुसलमान भी हैं। अतः मैं यह बात समझने में असमर्थ हूं कि कांग्रेस को मुस्लिम पार्टी के रूप में क्यों

प्रस्तुत किया गया है।

यूं तो उनका यह बयान बज़ाहिर बड़ा मासूम और सादा लगता है लेकिन इसकी तह में उतरने या उसके बैनस्सुतूर पर नज़र डालने के बाद यह बात साफ़ हो जाती है कि कांग्रेस भी सत्ता में वापस आने के लिये खुद को एक हिन्दु पार्टी के रूप में जिसमें मुसलमानों के लिये कोई जगह न हो या जिसको कम से कम मुसलमानों से कोई हमदर्दी न हो और जिसे मुसलमानों के वोटों की ज़रूरत भी न हो। क्योंकि इसके अनुसार अगर इसने मुसलमानों से वोट मांगे या ख़ुद को मुसलमानों की हमदर्द जमाअत के तौर पर पेश करने की कोशिश की तो उसे हिन्दुओं के वोट नहीं मिलेंगे। वह उससे दूर हो जायेंगे। उनके यहां इस बयान के बाद अंग्रेज़ी दैनिक इन्डियन एक्सप्रेस में एक बहस छिड़ गयी कि क्या मुसलमान भारत के राजनीतिक माहौल में अछूत बना दिये गये हैं?

हर्ष मिन्दर गुजरात कैडर के एक पूर्व आईएएस अधिकारी हैं। उन्होंने गुजरात दंगों के विरोध में विरोधस्वरूप अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया था। वे मानवाधिकार के बहुत बड़े कार्यकर्ता हैं तथा पीड़ितों के हक़ में बशमूल मुसलमानों के, खुलकर बोलते हैं। उन्होंने 17 मार्च को इन्डियन एक्सप्रेस में अपने कॉलम में सोनिया गांधी के इस बयान के परिप्रेक्ष्य में यह सवाल उठाया कि क्या मुसलमानों को राजनीतिक अछूत बना दिया गया है और क्या जो पार्टी मुसलमानों के अधिकारों की बात करेगी उसे वोट नहीं मिलेगा। उन्होंने लिखा कि आज़ादी के बाद बीजेपी पहली ऐसी राजनीतिक पार्टी है जिसका लोकसभा में एक भी मुसलमान सांसद नहीं है। उसने मुसलमानों को छोड़ दिया है। लेकिन अब अधिकतर राजनीतिक पार्टियों ने भी यह स्वीकार कर लिया है कि यदि वे मुसलमानों के क़रीब नज़र आएंगी तो उन्हें हिन्दु बहुसंख्यकों का वोट नहीं मिलेगा। इस संबंध से उन्होंने सोनिया गांधी के बयान पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है उनके कांग्रेस के 19 वर्षीय के दो भाग की अध्यक्षता में उनके सेक्यूलर दृष्टिकोण के बारे में कभी संदेह नहीं किया गया। लेकिन अब उन्होंने मानो यह स्वीकार कर लिया है कि कांग्रेस को इसलिए नुक़सान पहुंचा है कि बीजेपी जनता को यह समझाने में कामयाब हो गयी कि कांग्रेस एक मुस्लिम पार्टी है। वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रतअंग्रेज़ माहौल के तनाज़ुर में कहते हैं कि मुसलमानों के लिये इतना बुरा वक़्त पहले कभी नहीं आया था। यहां तक कि बंटवारे के समय भी नहीं। हालांकि दुनिया में मुसलमानों की जो आबादी है उसका दसवां भाग भारत में है। इसके बावजूद वे आज बेघर–बार के सियासी यतीम बना दिये गये हैं।

हर्ष मिन्दर के कॉलम के जवाब में प्रसिद्ध इतिहासकार रामचन्द्र गुहा ने 20 मार्च को उसी अख़बार में कॉलम लिखा। उन्होंने हर्ष की दलीलों को ऐसे नकारा जैसे कि उन्होंने यह कॉलम नागपुर में बैठ कर लिखा हो। वह उनके ज़रिये ज़िक्र किये गये एक वाक़्या पर जिसमें एक दलित लीडर अपनी अवामी तक़रीर में मुसलमानों से कहता है कि वह उसके जलसों में जब आएं तो टोपी और बुर्क़ा के बिना आएं , तबसिरा करते हुए कहते हैं कि यह मशविरा बहुत ही तरक़्क़ीपसंदाना हैं। मुझ समेत बहुत से लोग रैलियों में हिन्दुओं के भगवा गमछा और त्रिशूल के साथ जाने के ख़िलाफ़ हैं। वह कहते हैं कि बुरक़ा अगरचे हथियार नहीं है लेकिन अलामती तौर पर त्रिशूल के मसावी हैं। गोया राम चन्द्र गुहा बुरक़ा और त्रिशूल को एक ही ख़ाने में रख रहे हैं। वह इस बात की हिमायत करते हैं कि रैलियों में बुर्क़ा और टोपियों के साथ नहीं जाना चाहिये। लेकिन हर्ष मिन्दर और एक और इन्साफ़पसंद दानिशवर और दिल्ली यूनिवर्सिटी के उस्ताद प्रोफ़ेसर अपूर्वानन्द का कहना है कि बुर्क़ा और टोपी हथियार नहीं बल्कि मुसलमानों की धार्मिक पहचान हैं। जो लोग इसका विरोध करते हैं वह मुसलमानों की शिनाख़्त के मुख़ालिफ़ हैं। अपूर्वानन्द ने बुर्क़ा और त्रिशूल की तुलना करने पर रामचन्द्र गुहा की कठोर आलोचना की और कहा कि यह इन्तिहाई वहशतअंगेज़ तुलना है।

अब्दुल ख़ालिक़ राम विलास पासवान की लोकजन शक्ति पार्टी में एक मुस्लिम चेहरे के तौर पर जाने जाते हैं। उन्होंने भी इन्डियन एक्सप्रेस में एक कॉलम लिखा। 31 मार्च के इस कॉलम में उन्होंने हर्ष मिन्दर की हिमायत और रामचन्द्र गुहा की मुख़ालिफ़त की। वह लिखते हैं कि रामचन्द्र गुहा के मज़मून को पढ़कर सकते में आ गया। उन्होंने मुसलमानों की तस्वीर कशी एक ही ब्रश से कर दी और बुर्क़ा और टोपी को कुरूने वुस्ता की अलामत क़रार दिया है। वह एक तारीख़दां की हैसियत से उनकी शख़्सियत का एतराफ़ करते हुए उनपर बहुत से मुआमिलात में मुसलमानों के मुबनी बर हक़ीक़त मौक़िफ़

को नज़रअंदाज़ करने का इल्ज़ाम आएद किया। वह लिखते हैं कि तश्वीशनाक बात यह है कि हुकूमती इदारों ने अक्सर व बेशतर मौक़ें पर अक्सरियत के एजेन्डे को नाफ़िज़ करने के लिये उसके साथ साज़ बाज़ कर ली।

मुल्क के मारूफ़ सहाफ़ी और कॉलमनिगार कुलदीप नैयर साबिक़ एम पी मुहम्मद अदीब और जस्टिस मुहम्मद सुहैल ऐजाज़ सिद्दीक़ी वग़ैरह भी इस सूरतेहाल पर बारहा अपनी तश्वीश का इज़हार कर चुके हैं। मज़कूरा शख़्सियात ने नई दिल्ली में आयोजित एक सेमिनार में इज़हारे ख़्याल करते हुए मौजूदा हालत को मुल्क के लिये इन्तिहाई तबाहकुन क़रार दिया। उनका कहना है कि आज वोट हासिल करना बहुत आसान हो गया है। मुसलमानों को गालियां दीजिए वोट ख़ुद ब ख़ुद मिल जाएगा। लेकिन कुलदीप नैयर इस सूरते हाल के लिये मुसलमानों को भी ज़िम्मेदार मानते हैं। वह कहते हैं कि आज मुसलमानों ने ख़ुद को सरेन्डर कर दिया है। उन्हें ऐसा करने के बजाय पूरी ताक़त के साथ खड़ा होना चाहिये और अपनी सियासी हैसियत मनवानी चाहिये। कुलदीप नैयर की मानिन्द और भी बहुत से ऐसे इन्साफ़ पसंद सहाफ़ी, दानिशवर और इन्सानी हुकूक़ के कारकुन हैं जो मौजूदा हालात पर तश्वीश ज़दा हैं।

कांग्रेस ने सोनिया गांधी के बयान पर होने वाली तनक़ीद को कोई अहमियत नहीं दी और वह यह कोशिश करती रही कि उसे भी एक हिन्दु पार्टी माना जाये। इसके लिये उसने नर्म हिन्दुत्व का सहारा लिया। हालांकि गुजरात इन्तिख़ाबात के दौरान सीनियर बीजेपी लीडर अरुण जेटली ने कहा था कि "कांग्रेस बीजेपी की नक़ल कर रही है और जब एक अस्ल हिन्दु पार्टी मौजूद है तो कोई नक़ली हिन्दु पार्टी के पास क्यों जायेगा?" यानि उन्होंने जहां यह बात वाज़ेह कि बीजेपी हक़ीक़ी हिन्दु जमाअत है वहीं यह भी उजागर कर दिया कि कांग्रेस भी हिन्दु पार्टी बनने के लिये बेताब है। कांग्रेस सदर राहुल गांधी ने जो कि गुजरात इन्तिख़ाबात के दौरान सदर के मन्सब पर फ़ायज़ नहीं हुए थे पूरी रियासत में मंदिर–मंदिर दौड़ लगायी थी। वह कभी इस मंदिर जाते तो कभी उस मंदिर। लेकिन इस ख़ौफ़ से कहीं उनकी पार्टी को फिर मुस्लिम दोस्त पार्टी का ताना न दिया जाये वह किसी मस्जिद, दरगाह या मुस्लिम और इस्लामी केन्द्र पर हाज़िरी देने से कतराते रहे। बीजेपी लीडरों ने इस पर उनके मज़हब पर सवाल खड़ा किया था और पूछा था कि वह बताएं कि वह हिन्दु हैं या नहीं। कांग्रेस की जानिब से इसका जवाब देते हुए कहा गया था कि वह जनेउ धारी हिन्दु हैं। गुजरात इलेक्शन के दौरान राहुल गांधी ने बार बार यह दिखाने की कोशिश की कि वह हिन्दु हैं और मुसलमानों से उनका कोई रिश्ता नही हैं।

इसी तरह हालिया कर्नाटक चुनाव में भी उन्होंने जोकि अपनी पार्टी के सदर बन चुके हैं यही रवैया अख़्तियार किया। वहां भी उन्होंने कभी इस मंदिर में माथा टेका तो कभी उस मंदिर में। लेकिन पूरी मुहिम के दौरान कभी–कभी मुसलमानों के किसी मसले के बारे में अपनी ज़बान से एक भी शब्द अदा नहीं किया। उन्होंने मुस्लिम मुहल्लों और इलाक़ों में भी जाने से परहेज़ किया और अपनी हरकात व सुकूनात से यह वाज़ेह नहीं होने दिया कि उन्हें मुसलमानों से कोई हमदर्दी है। उन्होंने सिर्फ़ इस वजह से ऐसा किया कि आर एस एस ने देश में जो सियासी माहौल बना दिया है और मज़हब के नाम पर जिस तरह ज़हर घोल दिया गया है उसमें कांग्रेस को लगता है कि मुसलमानों की बात करना सियासी ख़ुदकुशी होगी।

यह सिर्फ़ कांग्रेस का मामला नहीं है। बीजेपी तो पहले से मुस्लिम मुख़ालिफ़ पार्टी रही है। उसने कभी भी मुसलमानों को अपने क़रीब लाने की कोशिश नहीं की। उसने मुसलमानों को सियासी तौर पर बेवक़अत बनाने की मुहिम बड़ी चालाकी से चलायी और वह उसी में कामयाब भी रही। उसने विशेषतयः प्रधानमंत्री ने पिछले संसदीय चुनाव में मुसलमानों की सियासी हक़ीक़त ज़ीरो कर दी और उन्हें यह बता दिया कि उनके बिना भी इतनी शानदार कामयाबी हासिल की जा सकती है।

अगर हालिया चार बरसों में सियासी व इन्तिख़ाबी हालात का गहराई से तजज़िया किया जाये तो उसी नतीजे पर पहुंचा जा सकेगा कि दूसरी सियासी जमाअतें भी मुसलमानों का नाम लेने से डरती हैं। एक ज़माना था कि जब मुसलमान समाजवादी पार्टी के उस समय के सदर मुलायम सिंह के बड़े अक़ीदतमंद थे। वे भी राजनीतिक लाभ की ख़ातिर मुसलमानों के मसीहा बने हुए थे। यहां तक कि उन्हें मौलाना मुलायम कहा जाने लगा

था। उसके बाद बहुत से मुसलमानों ने मायावती का दामन थामा। वह भी कभी–कभी मुसलमानों के मसाएल उठाती रहीं हैं। लेकिन अब सूरते हाल यह है कि समाजवादी पार्टी हो या बीएसपी दोनों में से कोई भी मुसलमानों का नाम लेने के लिये तैयार नहीं। हालांकि गोरखपुर और फूलपुर के उपचुनावों में मुसलमानों ने इन दोनों पार्टियों का इत्तिहाद का खुलकर साथ दिया। लेकिन फिर भी यह दोनों पार्टियां यह कहने की जुर्रत अपने अन्दर नहीं पातीं कि मुसलमानों के साथ नाइन्साफ़ी हो रही हैं या वे मुसलमानों को साथ लेकर चलने को तैयार हैं। कभी कोई बयान आ जाए तो अलग है। लेकिन हक़ीक़त यह है कि उनको भी मुसलमानों का नाम लेते हुए डर लगता है। वह तो मानवाधिकार संस्थाएं और कार्यकर्ता देश के वर्तमान धर्मनिरपेक्षों का एक वर्ग है जो मुस्लिम विरोधी माहौलसाज़ी के लिये पूरी ताक़त के साथ बोलता रहता है। पिछले चार सालों में अलग–अलग कारणों से मुसलमानों को निशाना बनाने के ख़िलाफ़ जितनी ताक़त से आवाज़ उठायी है उसकी कोई मिसाल नहीं है।

देश में बिलवास्ता तौर पर आरएसएस की हुकूमत क़ायम होने के बाद बतदरीज जो माहौल बनाया गया है वह मुसलमानों के ताल्लुक़ से इन्तिहाई ख़तरनाक है। आम हिन्दुओं में भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत का ज़हर भर दिया गया है। सोशल मीडिया के माध्यम से यह ज़हर तेज़ी से फैलाया जा रहा है। अलग–अलग बहानों से मुसलमानों को देश का ग़द्दार साबित करने की कोशिश क ामक़सद यही है कि उन्हें सियासी तौर पर ग़ैर अहम बना दिया जाये। आज हालात इन्तिहाई तबाहकुन हो चुके हैं। अगर यही सूरतेहाल रही तो 2019 के सांसदी चुनाव में भी मुसलमान इसी तरह सियासी बेवज़नी का शिकार होंगे और कांग्रेस समेत कोई भी पार्टी उनका नाम लेने को तैयार नहीं होगी कि मुल्क का हिन्दु वोट उससे नाराज़ हो जाएगा। अगर इस इलेक्शन में कांग्रेस जीत भी जाती है और केन्द्र में उसकी सरकार बन भी जाती है तब भी वह मुसलमानों को अपने क़रीब लाने से बचती रहेगी। ख़्याल किया जाता है कि लगभग पन्द्रह–बीस साल यही सूरतेहाल रहने वाली है। आज़ाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों की ऐसी बेवज़नी शायद कभी देखने को मिली हो। ऐसा महसूस होता है कि मुसलमान जो एक मुल्क में दूसरी बड़ी अक्सरियत हैं सियासी अछूत बना दिये गये हैं।

शेषः दीनी मदरसे और उनकी ज़िम्मेदारियाँ

.....वह आंखों भी खोलता है और कान को भी सुनवाई देता और दिल को भी जज़्बात से मामूर करता है और अगर यह सब नहीं है तो उसकी हैसियत एक बेरूह जिस्म से ज़्यादा नहीं है। आजकल मदारिस का यही हाल है। एक अजीब बेरौनक़ी है। एक अजीब सी उदासी है। यह अच्छी अलामत नहीं है। वरना मदरसे में जाकर तो उछल जाना चाहिये कि अगर कोई मुसाफ़ा कर ले तो गर्मी से कैफ़ तारी हो जाए। लेकिन चूंकि अब इल्म से सही वाबस्तगी नहीं है इस वहज से जो फ़ुयूज़ व बरकात हासिल होना चाहिये वह नहीं हो रहे हैं।

निहायत अफ़सोस की बात है कि आज अहले मदारिस अपनी इन अहम ज़िम्मेदारियों से ग़ाफ़िल है। आज मदारिस की दीवारों पर बहुत मेहनत हो रही है। कमरे बहुत बन रहे हैं। इमारते बहुत बन रहीं हैं। लेकिन अन्दर हैच दर हैच है। अन्दरून में कुछ भी नहीं है। इसलिए ख़ुसूसी तौर पर जायज़ा लेने की सख़्त ज़रूरत है। इस सिलसिले में कोताही अच्छी अलामत नहीं। जब आदमी बूढ़ा हो जाता है तो चेकअप कराता है। इस तरह मदारिस का चेकअप भी होना चाहिये।

मदरसा सिर्फ़ इमारतों का नाम नहीं। हज़रत मौलाना अली मियां ने लिखा है कि हर चीज़ का एक शजरा–ए–नसब होता है। क़ुरबानी का एक शजरा–ए–नसब होता है। अगर क़ुर्बानी इब्राहीमी न हो, यानि उसका शजरा–ए–नसब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से न मिलता हो तो वह क़ुर्बानी नहीं है। ऐसे ही हर मस्जिद का ताल्लुक़ हरम शरीफ़ से है अगर वह ताल्लुक़ नहीं है तो मस्जिद नहीं है। और उसी तरह हर मदरसे का भी शजरा–ए–नसब है, जिस मदरसा का शिजरा सफ़ह–ए–नबवी से नहीं मिलता वह मदरसा मदरसा नहीं है।

दीनी मदारिस के क़याम का यही मक़सद है कि उन तमाम बातों को समझा जाए और उन पर अमल की भरपूर कोशिश की जाए। लेकिन हम लोग सिर्फ़ किताबों में ही उलझ कर रह जाते हैं और पढ़ने–पढ़ाने में कई बार ऐसा इन्हिमाक होता है कि सब पोशीदा हो जाता है। ज़रूरत है कि क़ुरआन व हदीस से अपना रिश्ता मज़बूत किया जाये और अपने अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा किया जाए, ताकि ख़ातिर ख़्वाह नताएज सामने आ सकें।

वचन निभाना

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः हज़रत अनस रज़ि0 से मरवी है कि हुज़ूर स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि शख़्स का ईमान मोतबर नहीं, जो अमानतदार न हो। और उस शख़्स के दीन का कोई एतबार नहीं जो वादे का पाबन्द न हो। (शोएबुल ईमान लिल बैहिक़ी)

फ़ायदाः अहद अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसके माने हैं ऐसा तयशुदा मामला जिसकी पाबन्दी लाज़िम हो। उर्दू ज़बान में अहद को वादा से भी ताबीर किया गया है। अहद कभी दो तरफ़ा होता है जैसे आपसी मामलात में और कभी एकतरफ़ा भी होता है जैसे क़सम और वसीयत वग़ैरह का पूरा करना। अरबी ज़बान में लफ्ज़े अहद के साथ पाबन्दी और वफ़ादारी का इन्तिहाई मज़बूत और अहम तसव्वुर है।

वादा का पाबन्द होना आला ईमानी सिफ़ात की अलामत है। और वादा ख़िलाफ़ी का मिज़ाज एक ग़ैर संजीदा अमल और अमली झूठ है। कुरआन मजीद और हदीसे नबवी में अहदो पैमान की पाबन्दी पर ख़ास ज़ोर दिया गया है और अहद की पाबन्दी को ईमान के मुकम्मल हो ने की अलामत क़रार दिया गया है। इसके बरख़िलाफ़ ग़ैर पाबन्द शख़्स को मोतबर नहीं माना गया है।

अहद यानी वादे का पाबन्द होना इसको मफ़हूम बहुत वसीअ है। अहद का ताल्लुक़ सिर्फ़ अख़लाक़ियात या दीन के किसी शोबे से नहीं बल्कि इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम मामलात से है, जिनमें हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद सब शामिल हैं। कुरआन मजीद में अहद की अहमियत यूं बयान की गयी है।

"और अहद को पूरा करना यक़ीनन अहद के बारे में पूछगछ होनी है।"

अहद की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं। सबसे पहली और आला शक्ल यह है कि इन्सान अल्लाह तआला के इस अहद का लिहाज़ रखे जो उसके और बन्दे के दरमियान रोज़े अव्वल से हुआ है, जिसके बारे में अल्लाह का इरशाद हैः और जब आपके रब ने औलादे आदम के बेटों से इनकी नस्ल निकालीं और ख़ुद उनसे अपनी जानों पर इक़रार किया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं, वह बोले क्यों नही हम उस पर गवाह हैं।"

बिलाशुब्हा यह अहद ज़िन्दगी में पेश आने वाले तमाम अहदों की शाहेकलीद है। अगर इन्सान अपना ख़ालिक़ व मालिक एक ज़ात का तस्लीम कर ले। उसी के बताए हुए अहकामात का पाबन्द रहे और हर लम्हा उसको इस्तहज़ार भी रहे तो ज़िन्दगी की तमाम राहें उसकी मर्ज़ी से तय होंगी।

अहद व पैमान की पाबन्दी की दूसरी शक्ल यह है कि इन्सान लोगों की रखी हुई अमानतों को बिना कमी बेशी के वक़्त पर अदा करे। जब किसी से नाप तौल का मामला करे तो ठीक करे। जब कोई शख़्स अपना राज़ बयान कर तो उसकी हिफ़ाज़त करे यह भी अहद की शक्ल है। कि जब दो लोगों या दो फ़रीक़ में लेन–देन का कोई मामला हो तो हर फ़र्द तय शुदा क़ौल व क़रार की पाबन्दी करे, ताकि हर एक का एतमाद बहाल रह सके। इसी तरह यह भी अहद की पाबन्दी में शामिल है कि इन्सान बन्दों के उन हुकूक का मुकम्मल ख़्याल रखे जिनकी अदायगी का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है। जैसे मां–बाप की ख़िदमत करना, मीरास में लड़कियों का तय हिस्सा देना वग़ैरह।

इस्लाम की इन तालीमात को सामने रखकर अगर मुसलामन समाज का जायज़ा लिया जाए तो इसकी सिम्त बिल्कुल मुख़ालिफ़ है। आज मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम समाज में फ़र्क़ मुश्किल है। मजमूई तौर पर ज़बानी और अमली झूठ, वादे के धोखाधड़ी, बददयानती और इस क़बील की बहुत सी ग़ैर इस्लामी आदतें मुसलमानों का शेआर बनती जा रही हैं और समाज के हर तबक़े ने यह बीमारियां एक नासूर की तरह फैल रही हैं, जिनके इस्लाह की फ़िक्र का एहसास भी ख़त्म मालूम होता है। यही वजह है कि आज मुस्लिम मुआशरा है मगर ईमानी कैफ़ियत नहीं है। पुरज़ोर दावे हैं मगर कोई हक़ीक़त नहीं।

अहद व पैमान की पाबन्दी, उलफ़त व मुहब्बत अमन व आशती और इन्साननवाज़ी को फ़रोग़ देती हैं। जिसके नतीजे में एक सालेह और तरक़्क़ीयाफ़ता समाज वुजूद में आ ता है। दूसरे हालत में फित्ना व फ़साद और लड़ाई–झगड़ा मुआशिरे का मुक़द्दर बन जाता है जिसके बाद हर इन्सान इन्सानियत को सिसकता है, मगर आला ईमानी सिफ़ात पर अमल की तरफ़ तवज्जो नहीं देता।

तुर्की चुनाव
एक विश्लेषण

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

24 जून दिन रविवार को तुर्की में सनसनीखेज़ चुनाव हुए। लगभग 6 करोड़ तुर्क नागरिकों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिये 6 उम्मीदवार मैदान में थे। तुर्की के चुनावी क़ानूनों के अनुसार यदि किसी भी उम्मीदवार को 50 प्रतिशत से अधिक वोट नहीं मिलते तो सबसे अधिक मत प्राप्त करने वाले दो उम्मीदवारों के मध्य दोबारा चुनाव कराया जाता है जिसे रन–ऑफ़ (त्नद.वीं) कहा जाता है और उसके लिये 8 जुलाई की तारीख़ तय थी। तैयब उर्दगान की पूरी कोशिश थी कि उन्हें पचास प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त हो जाएं ताकि उन्हें वोटिंग के दूसरे राउन्ड में न जाना पड़े, अतः ऐसा ही हुआ। उर्दगान को 53 प्रतिशत वोट मिले जबकि उनके विरोधी महरम अंजे को 31 प्रतिशत वोट मिले। इस प्रकार रजब तैयब उर्दग़ान ने राष्ट्रपति पद के चुनाव में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त कर ली।

तुर्की चुनाव की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसके लिये जैसी चुनावी मुहिम तुर्की में चली उससे कहीं अधिक उत्साह यूरोप में नज़र आया। फ्रांस के राष्ट्रपति एम्यूनल मैक्रोन, हालैन्ड के प्रधानमंत्री मार्क रोटे, जर्मन चांसलर एंजिला मर्किल और हंगरी के कट्टर जातिवादी प्रधानमंत्री विक्टर ऑर्बन के साथ अमरीकी नेतृत्व ने तैयब उर्दग़ान के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त मुहिम चलायी। यूरोपीय देशों में ''राष्ट्रपति उर्दग़ान एक तानाशाह'' के विषय से बड़े–बड़े पोस्टर लगा दिये गये। तुर्क क़ानून के अनुसार विदेशों में आबाद तुर्क नागरिकों को भी वोट डालने का अधिकार प्राप्त है, अतः तुर्की की राजनीतिक पार्टियां यूरोप के बड़े शहरों में भी रैलियां तथा सभाएं आयोजित करती रहीं, लेकिन उर्दग़ान की पार्टी ।झच को यूरोप में किसी भी प्रकार की राजनीतिक सभा करने की आज्ञा नहीं दी गयी।

तुर्की में राष्ट्रपति चुनाव नवम्बर 2019 ईसवी को होने वाले थे लेकिन राष्ट्रपति तैयब उर्दग़ान ने समय से पहले ही चुनाव कराने का निर्णय लिया। उनका पक्ष था कि तेज़ी से बदलती क्षेत्रीय परिस्थितियां, विशेष रूप से सीरिया में नॉटो तथा अमरीका की ओर से तुर्क विरोधी आतंकवादियों का समर्थन, यूरोप की ओर से अघोषित आर्थिक पाबन्दियों तथा दूसरी आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए सत्ता के लिये जनविश्वास के नवीनीकरण की आवश्यकता है। अतः उन्होंने 24 जून को चुनाव की घोषणा कर दी। संसद भंग कर दी तथा सांसदीय व राष्ट्रपति चुनाव एक ही दिन कराने का निर्णय लिया। अपनी सत्ता की समयसीमा को ऐच्छिक रूप से कम करके चुनाव की घोषणा एक ओर उर्दग़ान के पक्ष में नये राजनीतिक जनादेश की प्राप्ति का एक सकारात्मक लोकतान्त्रिक क़दम था तो दूसरी ओर पश्चिमी शक्तियों के लिये अत्यधिक चिन्ता का कारण। इसीलिए 18 अप्रैल को राष्ट्रपति उर्दग़ान की ओर से समय से पहले चुनाव की घोषणा के साथ ही ''तुर्की आमरियत (अधिनायकवाद) की राह पर'' के विषय के अन्तर्गत प्रबुद्ध मंडल (जेपदा ज्दो) ने सारे यूरोप में चर्चाएं व सेमिनार आयोजित किये और यह बताया गया कि नये क़ानून में तुर्क राष्ट्रपति को बहुत अधिक अधिकार दिये गये हैं तथा यदि उर्दग़ान दोबारा राष्ट्रपति चुने गये तो ख़िलाफ़त–ए–उस्मानिया (व्जजवउंद म्उचपतम) की पुनरावृति केवल कुछ दिनों की बात होगी।

उर्दग़ान के ख़िलाफ़ प्रोपगन्डे के साथ ही उनके मुक़ाबले के लिये एक मज़बूत प्रत्याशी की तलाश शुरू हुई। 2014 के राष्ट्रपति पद के चुनाव में रिवायती सेक्यूलर प्रत्याशी के बजाए व्ब के पूर्व सेक्रेटरी जनाब अकमलुद्दीन एहसान ओग़लो को मैदान में उतारा

गया था ताकि इस्लाम पसंदों के वोट बांटे जा सकें। इस बार फिर वही रणनीति अपनायी गयी कि और पूर्व राष्ट्रपति और ।ज्ञच के रहनुमा जनाब अब्दुल्लाह गुल को मुत्तहिदा हज़ब–ए–इख़्तिलाफ़ का टिकट प्रस्तुत किया गया, लेकिन उर्दगान से नाराज़गी के बावजूद अब्दुल्लाह गुल तैयार न हुए।

अब्दुल्लाह गुल के बाद राजनीति के क्षेत्र में उभरती हुई ख़ातून रहनुमा मेराल आक्सेनर को उर्दग़ान के मुक़ाबले के लिये तैयार किया गया। मेराल तुर्की की जनता में एक विख्यात नाम था। स्त्री होने के कारण तुर्की की जनता में एक नया जोश था। पहली स्त्री राष्ट्रपति की हैसियत से तुर्की एक नया इतिहास लिखने की राह पर था और यह इसलिए भी कठिन नहीं था कि मेराल की ख्याति नजमुद्दीन अरबकान के शिष्या के रूप में थी और उन्हीं के बैनर तले मेराल ने अपना राजनीतिक सफ़र शुरू किया था। प्रधानमंत्री तान्सूचिलर की मिलीजुली सरकार में थोड़े समय के लिये गृहमंत्री भी बनी थीं। कुछ समय बाद वह रिफ़ाही पार्टी से अलग होकर नेशनलिस्ट मूमेन्ट पार्टी (डभ्च) में शामिल हो गयीं और फिर जल्द ही अपनी पार्टी बना ली। इस नये राजनीतिक समीकरण के आधार पर इस्लाम पसंद, राष्ट्रवादी तथा घोर सेक्यूलर वर्ग समेत सभी राजनीतिक विचारधारा में उनके लिये लोगों का रवैया नर्म था। अतः उनके नाम पर मोहर लगा दी गयी तथा नये उत्साह के साथ चुनावी मुहिम आरम्भ हुई।

राजनीतिक तथा धार्मिक परिदृष्य के साथ मेराल की चुनावी कार्यवाहियों ने तुर्की की राजनीति में हलचल मचा दी और तैयब उर्दग़ान के मुक़ाबले उन्हें एक मज़बूत उम्मीदवार माना जाने लगा लेकिन इसी दौरान यह बात पता चली कि मेराल को फ़तेहुल्लाह गोलन का संरक्षण प्राप्त है। फ़तेहुल्लाह गोलन वही व्यक्ति हैं जिन्हें तुर्की में अमरीका के एजेन्ट के रूप में जाना जाता है तथा उन्हीं को 15 जुलाई 2016 को होने वाले सैन्य विद्रोह का मुख्य आरोपी माना जाता है। अतः फ़तेहुल्लाह गोलन का नाम सामने आते ही मेराल की साख को बहुत तेज़ी से बट्टा लगता है। इस प्रकार तैयब उर्दगान के मुक़ाबले उनकी दावेदारी ख़त्म हो जाती है।

मेराल के फ़लाप होने के बाद हज़ब इख़्तिलाफ़ का राजनीतिक सफ़र फ़िर आरम्भ बिन्दु पर आकर रुक गया। नये सिरे से एक ऐसे नाम की तलाश शुरू हुई जो उर्दगान को मज़बूत टक्कर दे सके। इस दौरान रिपब्लिकन पार्टी (ब्भ्) के उम्मीदवार प्रोफ़ेसर महरम अन्जे अपनी राजनीतिक मुहिम को ख़ासा व्यवस्थित कर चुके थे। वे मनोविज्ञान के प्रोफ़ेसर तथा वैचारिक रूप से धर्मनिरपेक्ष हैं। मेराल से मायूस होकर यूरोप तथा तुर्की के धर्मनिरपेक्ष तत्वों ने अपना सारा समर्थन मुहर्रम ओंज़े के पलड़े में डाल दिया और ज़ोरदार चुनावी मुहिम आरम्भ हुई। मीडिया ने प्रोपगन्डे के साथ मनोवैज्ञानिक युद्ध भी आरम्भ कर दिया जिसमें अमरीका का फ़ॉक्स टेलीविज़न सबसे आगे था। फ़ॉक्स के साथ बीबीसी, जर्मन मीडिया तथा यूरोप के विश्लेषकों ने भी जनमानस की राय को प्रभावित करने की कोशिश की और उर्दगान की साख को कम आंकते हुए ज़ोरदार तरीक़े से यह प्रभाव डालने का प्रयास किया कि उनकी प्रसिद्धि मुश्किल से 46ः से 48ः तक है, जबकि सफल होने के लिये 50 प्रतिशत वोट आवश्यक हैं। अतः जब 24 जून को फ़ैसला आयेगा तो उर्दगान अपनी मंज़िल से दूर होंगे, जिसके नतीजे में क़ानून के मुताबिक़ पहली और दूसरी पोज़ीशन पर आने वाले उम्मीदवारों के बीच निर्णायक मुक़ाबला यानि रन–ऑफ़ होगा। उन विश्लेषकों ने उर्दगान के विरोधियों का हौसला बुलन्द कर दिया। एक ओर चुनावी मुहिम न` ज़ोर पकड़ा तो दूसरी ओर सांसदीय चुनाव के लिये ब्भ् ने मेराल की प्ल् पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ मिलकर एक राष्ट्रीय मोर्चे का निर्माण किया और फिर सआदत पार्टी भी इस मोर्चे में शामिल हो गयी। इसके साथ सिराते मुस्तक़ीम पार्टी, लेफ़्ट विंग की डेमोक्रेटिक लेफ़्ट पार्टी तथा मादर–ए–वतन पार्टी ने भी राष्ट्रीय एकता मोर्चे के

समर्थन की घोषणा कर दी। नेशनलिस्ट मूवमेन्ट पार्टी पहले ही से उर्दगान की समर्थक थी। अतः उन दोनों पार्टियों ने मिलकर सांसदीय चुनाव के लिये जनएकता मोर्चा स्थापित कर लिया तथा जल्द ही इस्लामी विचारों की समर्थक राइट विंग की एक छोटी पार्टी ठठच भी जनएकता मोर्चे का हिस्सा बन गयी।

धर्मनिरपेक्षता की सुरक्षा, नागरिक स्वतन्त्रता तथा तुर्क राष्ट्रवाद मुहर्रम अंजे के घोषणापत्र का हिस्सा थे। इसी के साथ उन्होंने गृहयुद्ध का शिकार सीरियन को शरण देने पर उर्दगान की कठोर आलोचना की क्योंकि उनके अनुसार वे देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ हैं। यह तो आपको मालूम ही है कि तुर्की ने सत्तर लाख़ सीरियन शरणार्थियों को पनाह दी हुई है जिनमें बहुत से लोगों को तुर्की की नागरिकता दे दी गयी है। महरम अंजे ने ऐलान किया कि वे सत्ता में आते ही सीरियन शरणार्थियों को देश से निकाल देंगे। सीपीएच के राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की यह घोषणा संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों का खुला हुआ उलंघ्घन था जिसके अनुसार शरणार्थियों को विस्थापन की व्यवस्था किये बिना देश से निकालने की आज्ञा नहीं है। लेकिन इस संगदिल पक्ष को यूरोप के राष्ट्रवादियों का भरपूर समर्थन मिला किन्तु आम तुर्कों में महरम का पक्ष सराहा नहीं गया।

इसके मुक़ाबले उर्दगान की चुनावी मुहिम का आधार साफ़ छवि वाली सत्ता, उस्मानी मूल्य, रक्षा के क्षेत्र में ख़ुद मज़बूत होने के साथ दुनिया भर में मानवाधिकार के बचाव पर था। इस अन्तिम बिन्दु पर "सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है" की फ़ब्ती कसी गयी, लेकिन तुर्क नागरिकों ने उसे बहुत पसंद किया।

चुनावी मुहिम के आरम्भ से ही उर्दगान का पल्ला भारी था लेकिन ब्ध् को एक महागठबंधन के आधार पर यह आशा थी कि वह पहले ही क्रम में वांछित 50 प्रतिशत वोट नहीं ले सकेंगे और उर्दगान को दूसरे चरण में प्रत्यक्ष चुनाव में मात दे दी जाएगी। इसी कारण से चुनाव वाले दिन ज़बरदस्त उत्साह पाया गया लेकिन नतीजों ने धर्मनिरपेक्ष गठबन्धन की उम्मीदों पर पानी फेर दिया और तैयब उर्दगान ने पहले ही चरण में बहुमत प्राप्त करके कमाल अता तुर्क के बाद सबसे ताक़तवर नेता बन गये तथा 2023 तक के लिये तुर्की के राष्ट्रपति घोषित किये गये।

वर्तमान चुनाव इस दृष्टि से महत्वपूर्ण थे कि अब राष्ट्रपति के अधीन चलने वाली व्यवस्था लागू हो जाएगी। इस व्यवस्था के तहत प्रशासन तथा संसद को बिल्कुल अलग कर दिया जाएगा और अमरीका की तरह मंत्री राष्ट्रीय संसद का हिस्सा नहीं होंगे बल्कि यदि राष्ट्रपति ने किसी राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्य को काबीना का सदस्य नामज़द किया तो उसे मंत्रीपद की शपथ लेने से पहले संसद की सदस्यता से इस्तीफ़ा देना पड़ेगा। संसद केवल क़ानून निर्माण का कार्य करेगी तथा समस्य प्रशासनिक अधिकार राष्ट्रपति के पास हैं। प्रधानमंत्री का पद समाप्त कर दिया जाएगा और राष्ट्रपति अपने नायब के लिये उपराष्ट्रपति के नाम की घोषणा करेंगे जो संसद का अध्यक्ष होगा।

चुनाव जीत जाने के बाद तैयब उर्दगान को बहुत से गंभीर चैलेंजो का सामना करना है। यूरोप के अधिकतर देशों का रवैया तुर्की से शत्रुता का है जिसके कारण उन देशों ने बहुत सी अघोषित पाबन्दियां भी लगा दी हैं और आगे भी वे अपनी दुश्मनियां ज़ाहिर करते रहेंगे। पिछले कुछ समय से तुर्की मुद्रा (तुर्किश लीरा) अत्यधिक दबाव में है। इधर कुछ माह के दौरान इसके मूल्य में 20 प्रतिशत की कमी आयी है। तुर्की की इराक़ और सीरिया से मिलने वाली सीमाओं पर तनाव है जिसके कारणवर अनक़रा के रक्षा खर्चे बहुत अधिक हैं। तुर्की की अर्थव्यवस्था के लिये उर्दगान ने लड़ाकू विमान उधोग की स्थापना, सोलर एनर्जी को बढ़ावे रक्षा साम्रगी उधोग को उन्नति प्रदान करने की योजना बनायी है। तुर्क क़ौम 5 साल बाद 2023 में अपनी आज़ादी का 100 साला जश्न मनाएगी। राष्ट्रपति उर्दगान ने 2023 में देश की प्रति व्यक्ति आय के लिये 23 हज़ार डॉलर का लक्ष्य तय किया है जबकि इस समय प्रति व्यक्ति आय 11 हज़ार डॉलर के क़रीब है। मानो समय बहुत कम है तथा मुक़ाबला बहुत कठिन!

ज़बान की नेकियां

बिना सोचे समझे कोई बात नहीं कहनी चाहिये

हुज़ूर स०अ० की बातों से मालूम होता है कि ज़बान मानव अंगों में बड़ी ताक़त व प्रभाव रखती है और इसकी ज़रा सी लापरवाही से दुनिया व आख़िरत में बड़ा वबाल होता है। इसी लिये इसकी हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने इसकी हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है और इसकी निगेहबानी करने वाला तय किया है कि एक–एक शब्द सुरक्षित हो जाये।

अल्लाह का इरशाद है: "इन्सान ज़बान से कोई बात नहीं निकालता मगर उसके लिये एक निगरां तैयार है।" (सूरह क़ाफ़)

हमारे लिये ज़रूरी है कि हम जो बात ज़बान से निकालें ख़ूब सोच–समझ कर निकालें। बात कहें तो सच्ची और अच्छी कहें वरना ख़ामोश रहना बेहतर है।

हुज़ूर अक़दस स०अ० ने फ़रमाया: "जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिये कि बात कहे तो बेहतर कहे वरना ख़ामोश रहे।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

हमारा एक बड़ा फ़र्ज़ ये है कि बहुत से बातें हम बे सोचे समझे कह जाते हैं और इसका एहसास नहीं होता कि ये बात हमको कहां ले जा रही है और इसका क्या परिणाम आयेगा। कई बार एक छोटी सी बात कहने वाले को जन्नत पहुंचा देती है और कई बार जहन्नम का रास्ता दिखा देती है और कहने वाले को अपने अन्जाम की ख़बर तक नहीं होती।

हुज़ूर स०अ० का पाक इरशाद है: "बन्दा कई बार ऐसी बात बोल जाता है जिससे अल्लाह की रज़ा हासिल हो जाती है मगर उसकी अहमियत नहीं मालूम होती। इस बात के ज़रिये अल्लाह तआला उसके दर्जों को बुलन्द कर देता है और कोई बन्दा ऐसी बात कह बैठताा है कि जिसके कहने से अल्लाह तआला का ग़ुस्सा नाज़िल होता है और उसको कुछ ख़बर नहीं होती कि इसके कारण वो आग में जा रहा होता है।" (बुख़ारी)

जब एक बात इन्सान को कहीं से कहीं पहुंचा देती है तो जिन लोगों को बहुत ज़्यादा बोलने की बीमारी है उनका क्या हाल होता होगा। इसलिये ज़्यादा बातचीत करने से बचना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। बेकार की बातें बड़े फ़ितनों और फ़सादों का दरवाज़ा खोलती है और इसका ख़मियाज़ा कई बार दुनिया में भुगतना पड़ता है और आख़िरत में तो लाज़िमी भुगतना होगा।

"तुम अल्लाह के ज़िक्र के अलावा ज़्यादा बात न किया करो, ज़्यादा बोलना दिल को सख़्त कर देता है और सख़्त दिल आदमी अल्लाह तआला से बहुत दूर है।" (तिरमिज़ी)

अल्लाह तआला ने इस ज़बान में बहुत सी ख़ूबियां रखीं हैं और बहुत से ऐब। हर ख़ूबी व ऐब की निशानदेही क़ुरआन शरीफ़ और हदीस पाक में की गयी है और इस सिलसिले में बहुत सी हिदायतें दी गयी हैं।

अल्लाह तआला लिखने वाले और पढ़ने वाले को अपनी मर्ज़ी पर चलाये और ज़बान की हिफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन!

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 07 JULY 2018 VOLUME: 10

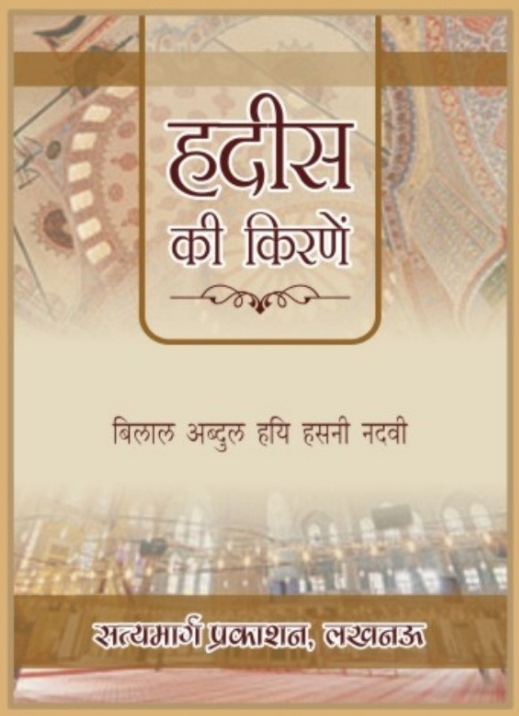

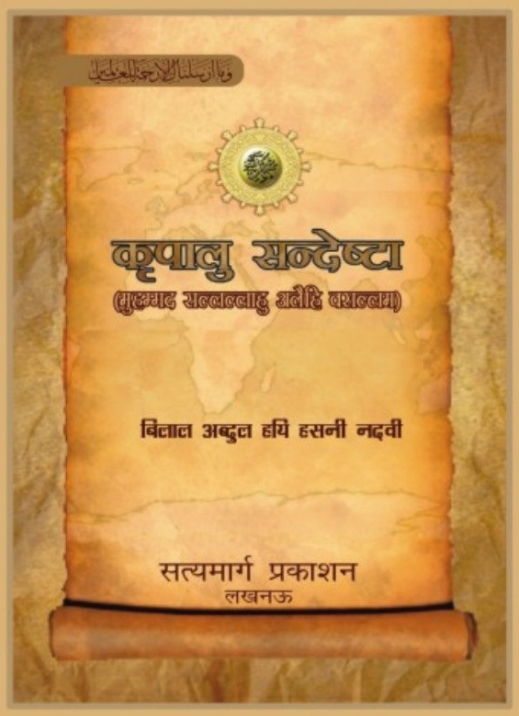

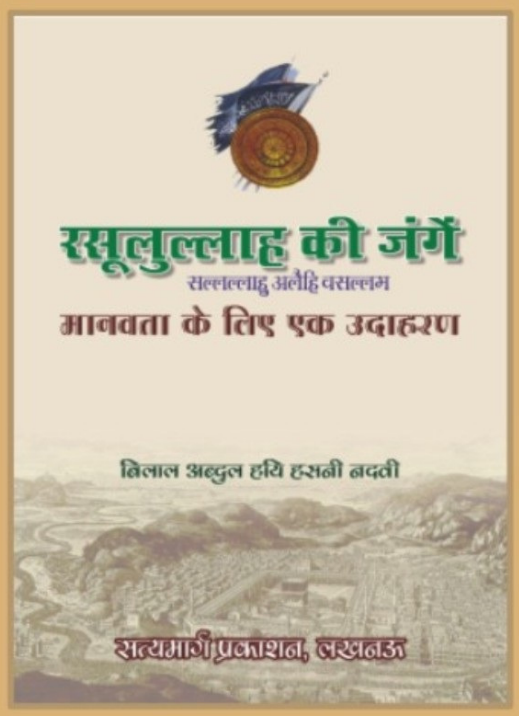

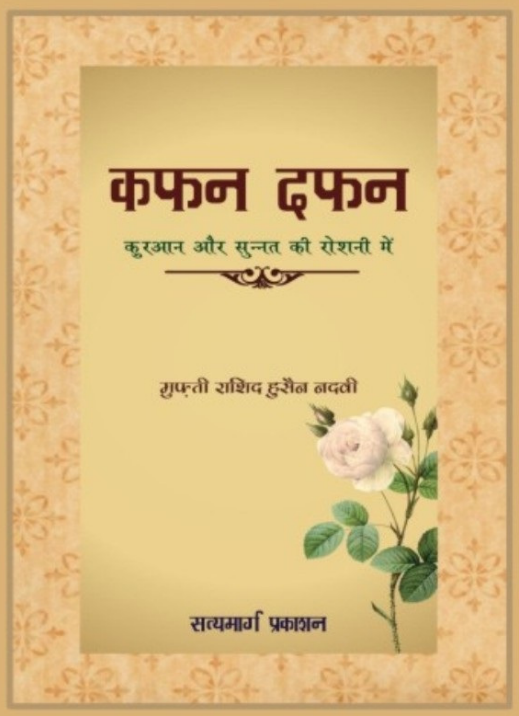

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.